मान मन्दिर बरसाना

मासिक पत्रिका

फरवरी २०२०, वर्ष ४, अंक २

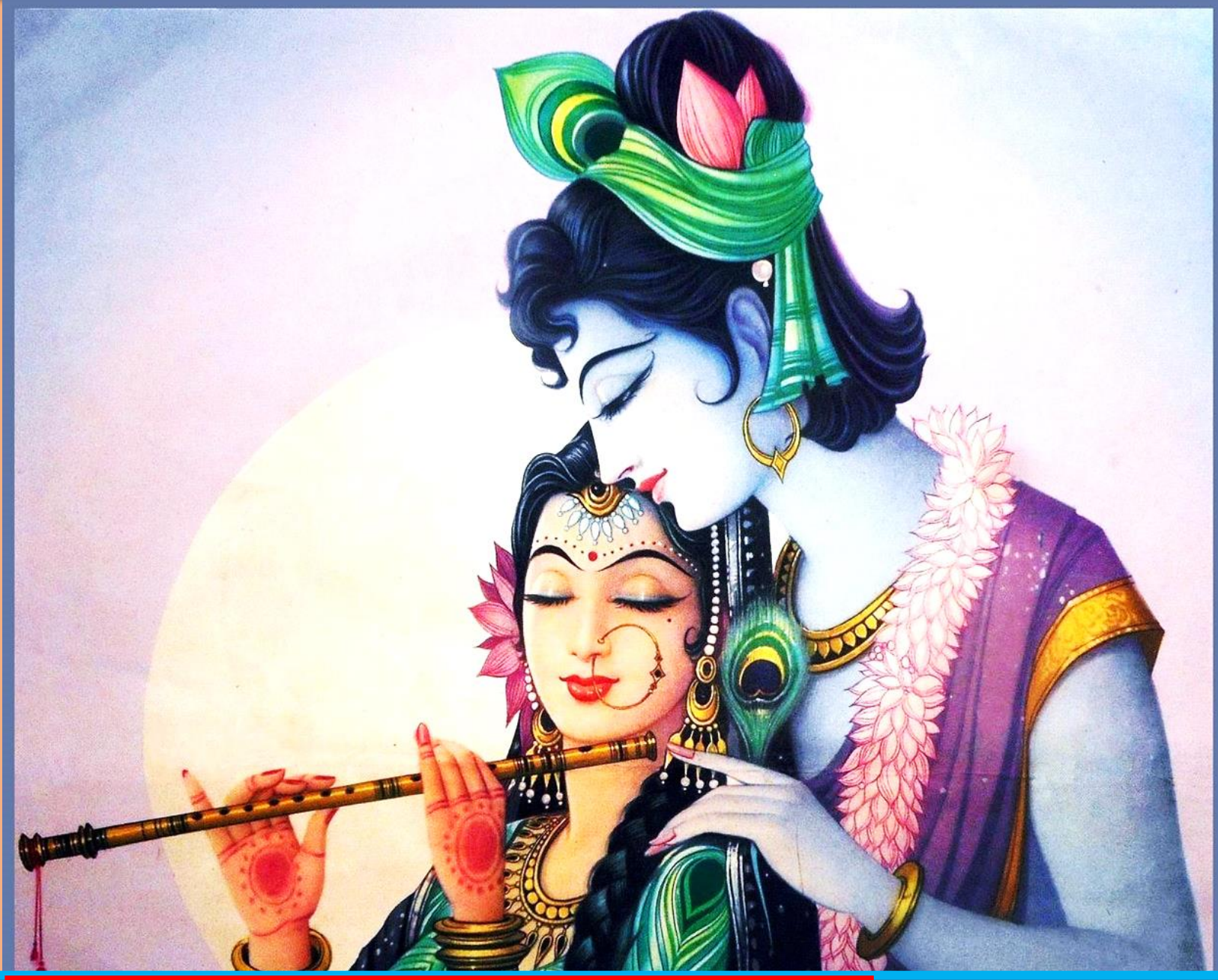

आत्मारामस्य कृष्णस्य ध्रुवमात्मास्ति राधिका ।

अपनी आत्मामें रमण करनेके कारण भगवान् श्रीकृष्ण आत्माराम हैं और उनकी आत्मा हैं श्रीराधिका |

(श्रीमद्भागवत, उ. मा. स्कन्द पु. २/१४)

मूल्य १०/-

मान मन्दिर
सेवा संस्थान ट्रस्ट
गहवरवन, बरसाना (मथुरा)
www.maanmandir.org

केन्द्रीय पशुपालन मंत्री श्रीगिरिराज सिंह श्रीबाबा महाराज के आशीर्वचन श्रवण करते हुए

केन्द्रीय पशुपालन मंत्री श्रीगिरिराजसिंह श्रीमाताजी गौशाला में

श्रीमानमन्दिर के साधु-संतों द्वारा छाता ब्लॉक (मथुरा) के गांवों में हरिनाम प्रचार

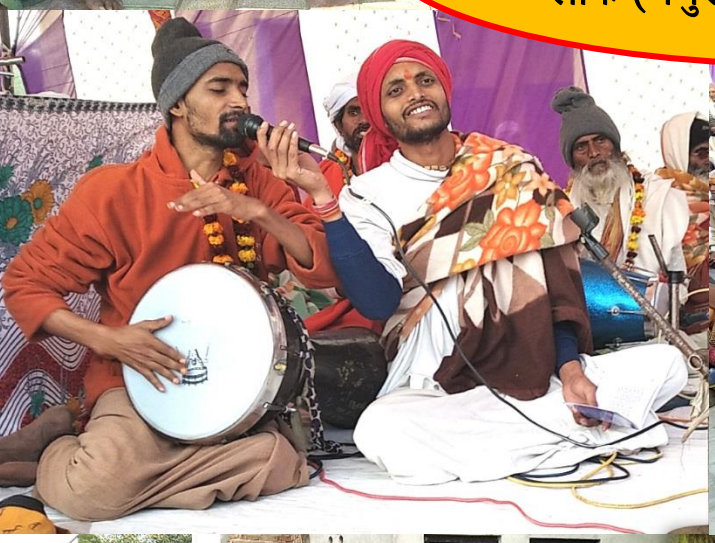

अनुक्रमणिका

विषय-सूची		पृष्ठ- संख्या
१	बाबाश्री की ब्रज-भक्ति	०३
२	भागवत-धर्म का वास्तविक स्वरूप	०७
३	'भारतीय विद्यालयों' पर कान्वेंट स्कूलों का कुप्रभाव	१२
४	सरल-सरस साधन 'श्रीभगवन्नाम'	१६
५	श्रीयुगलरस-प्रदायिका 'ब्रज-वसुन्धरा'	१८
६	रसमयी भक्ति 'नृत्य-गान'	२०
७	भक्त-कृपा का प्रभाव	२३
८	वास्तविक बोधकारिणी 'श्रीमद्भगवद्गीताजी'	२५
९	भजन-निष्ठ भक्त 'सदन कसाईजी'	२७
१०	'भारतवर्ष' का उज्जवल भविष्य	२९

सजनी राधे जू रस की खान, श्याम की मंद मंद मुसकान ||

श्यामा बसी श्याम की अँखियाँ
श्याम बसे प्यारी की अँखियाँ
सजनी नैनन की उरझान, श्याम की ....|
हृदय महल के बीच बसे दोऊ
नैनन सैनन देख हंसे दोऊ
सजनी सखियन के हैं प्रान, श्याम की ....|
कुंज भवन में फूल बिछौना
ता पै खेलैं प्रेम खिलौना
सजनी गावैं रस के गान, श्याम की ....||

— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो |

- पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,
गह्वरवन बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :ms@maanmandir.org)
mob. : 9927338666, 9837679558

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले |"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रेमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गौ सेवा प्रकल्प को दान कर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें | हिन्दू शास्त्रों में अंश मात्र गौ सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

प्रकाशकीय

भगवान् का अवतरण विशेषत: भक्तों को सुख प्रदान करने के लिए होता है | शरणागत भक्त जो नीराग होते है, उनका अपराध कोई करेगा तो भगवान् अपराधी का सर्वनाश ही कर डालेंगे | अत: भक्तापराध से सबको डरते रहना चाहिए | भगवान् स्वयं कहते हैं कि यदि मेरी भुजाएँ भी भक्त का अपराध करेंगी तो मैं उन भुजाओं को भी काट डालूँगा | भक्त सभी के सेव्य हैं | स्वयं प्रभु भी भक्तों की सेवा किया करते हैं | भक्तों का जीवन परमार्थ हेतु ही होता है | वृक्ष जैसे स्वयं कष्ट सहकर समस्त प्राणियों को सुख प्रदान करते है, वैसा ही भक्त का भी स्वभाव होता है, यही कारण है उन्हें महाभाग कहा गया है, जीवनकाल में तो परोपकार होता ही है, मृत्यु के पश्चात् भी उनके द्वारा परोपकार होता है, जाने से पहले वे ऐसा साहित्य या वचनामृत छोड़ जाते हैं, जिनसे दीर्घकाल तक लोकहित होता है | निष्काम भाव से सदा परोपकार किया जाना चाहिए | अपने पास कुछ नहीं भी है तो वाणी से भगवन्नामादि का प्रचार कर हम सबसे बड़ा परोपकार कर सकते हैं | ब्रज के परम विरक्त संत श्रीरमेशबाबाजीमहाराज की महती अनुकम्पा से आज लम्बे समय से मानमंदिर के संत, विद्यार्थी नित्य निरन्तर भगवन्नाम प्रचार की सेवा गाँव-गाँव में कर रहे हैं | भगवन्नाम से बढ़कर कोई दान श्रेष्ठ नहीं है | भक्त में बड़ी उदारता होती है, वे स्वयं तो भवाटवी से तरते हैं, साथ ही अपने सानिध्य में आने वाले समस्त जीवों को भी पार उतार देतें है, प्राणियों पर दया का यह सबसे बड़ा उदाहरण है | सभी प्राणियों में श्रीहरि हैं, उनकी सेवा स्वयं भगवान् की सेवा है | भगवन्नाम का दान निर्भयता प्रदान करता है | जीवों को निर्भय बनाने से बड़ा संसार में अन्य कोई कार्य नहीं हो सकता |

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ ।

जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ॥ (श्रीमद्भागवतजी ३/७/४१)

भगवद्दर्शन से भी बढ़कर है भक्त-सेवा, जो भगवन्नाम-दान से होती है | भगवान् ऐसे भक्तों से अत्यन्त प्रसन्न रहते हैं जो संकीर्तन-दान की सेवा में लगे रहते हैं | श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान के सभी सेवा-कार्य निष्काम भाव से की गई आराधना-शक्ति से सहज ही सफल हो जाते हैं |

प्रबंधक

राधाकांत शास्त्री

श्रीमान मन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

बाबाश्री की ब्रज-भक्ति

श्रीबाबामहाराज की टी.वी. चैनल से वार्ता

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी गोविंदीजी, मानमन्दिर, बरसाना

गतांक से आगे....**श्रीबाबामहाराज –** आली ब्राह्मण के हिन्दुओं ने मेरे कहने से कीर्तन करना आरम्भ किया जबकि दुर्वासा कुण्ड को लेकर उनके ऊपर केस चल रहा था, कई बार हिन्दू लोग केस हारे क्योंकि वहाँ का जो विधायक था, मुसलमान लोग उसी को वोट देते थे और वह उन्हीं का पक्ष लेता था, हिन्दुओं की उपेक्षा कर देता था किन्तु हाल ही में मुकदमा कोर्ट में गया, अब आली ब्राह्मण गाँव के हिन्दुओं को विजय प्राप्त हो चुकी है और दुर्वासा कुण्ड, जिस पर मुसलमानों ने कब्ज़ा कर लिया था, उस पर पुनः हिन्दुओं का अधिकार हो गया है; यह सब केवल भगवन्नाम-कीर्तन का ही चमत्कार है |

प्रश्नकर्ता– बाबा ! आपका जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा है, ब्रज में आपने बहुत से कार्य किये, ब्रज में ऐसी बहुत-सी धरोहरें थीं, जो पूर्णतया विलुप्त हो चुकी थीं, आपने उन्हें बचाने का कार्य किया | जब भी कोई व्यक्ति मानमंदिर पर आता है तो सबसे पहले उसे 'श्रीमाताजी गौशाला' का दर्शन होता है | अब यह बताइये कि इस गौशाला का प्रारम्भ कैसे हुआ, कहाँ से आपको गौशाला स्थापित करने की प्रेरणा मिली ?

श्रीबाबा– हमारा संगठन बढ़ा और इस संगठन में देश व हिंदुत्व की भावनाएँ बढ़ती गईं, इसी दृष्टि से गौसेवा-गौरक्षा हेतु यहाँ गौशाला स्थापित करने की भी चर्चा हुई | सन् २००७ में केवल ४-५ गायों से माताजी गौशाला की स्थापना की गई | मैंने गौशाला और मानमंदिर के प्रबंधकों से कह दिया कि तुम लोग गौ-सेवा के लिए कभी किसी से पैसा मत माँगना, यदि ईमानदारी से गौ-सेवा करोगे तो फिर किसी बात की कमी नहीं होगी | इसके बाद मानमंदिर के सुनीलसिंहजी (श्रीब्रजदासजी) अन्य नवयुवकों के साथ गौ-रक्षा के लिए बंदूक लेकर जाते थे और जो मुसलमान लोग ट्रकों में भरकर गायों को कसाई खाने ले जाते थे, उनसे लड़ते थे तथा गायों को उनसे मुक्त कराकर माताजी गौशाला में लाते थे | इस तरह गौशाला में अधिकतर गौ-वधिकों, कसाइयों से छुड़ाकर लायी हुई गायें रह रही हैं | इस प्रकार धीरे-धीरे वधिकों के चंगुल से मुक्त कराकर तथा समाज द्वारा उपेक्षित गायों की संख्या इस गौशाला में बढ़ती गई तथा ईमानदारी के साथ गायों की सेवा की गई तो गौ-सेवा हेतु धन भी धीरे-धीरे आता रहा | इस समय ५५ से ६० हजार गौवंश की सेवा 'श्रीमाताजी गौशाला' में हो रही है |

प्रश्नकर्ता– मैंने देखा है कि यहाँ केवल ब्रज से ही नहीं बल्कि अन्य प्रदेशों से भी गायें लाई जाती हैं |

श्रीबाबा– यहाँ पंजाब, हरियाणा, गुजरात, और उत्तरप्रदेश के कई स्थानों से गायों को लाया गया है |

प्रश्नकर्ता– इस गौशाला में 'गोबर गैस प्लान्ट' भी लगाया गया है, उससे क्या होता है और ये सब व्यवस्थाएँ कैसे चलती हैं ?

श्रीबाबा– धीरे-धीरे यहाँ गौ-सेवा बढ़ी, गौ-सेवा का खर्च बढ़ा, फिर यह विचार किया गया कि 'गोबर गैस प्लान्ट' यदि यहाँ लगाया जाये तो उससे काफी सुविधा रहेगी तो इस तरह फिर 'गोबर गैस प्लान्ट' का निर्माण किया गया |

प्रश्नकर्ता– श्रीयमुनाजी के लिए भी आपने बहुत काम किया है, पहले की सरकारें केवल झूठा वादा करती रहीं, काम कुछ नहीं किया, उसके बाद वर्तमान में अब हिंदूवादी सरकार है जो कि 'भारतीय संस्कृति' की पुरातन चीजों को बचाने के लिए कार्य कर रही है तो आपको क्या लगता है कि जब यमुना शुद्धिकरण की बात होती है तो सरकार से कोई सहयोग मिलता है कि नहीं क्योंकि इसके लिए आपने बहुत आन्दोलन किए, व्यक्तिगत तौर पर भी आप

'यमुना शुद्धिकरण' के प्रयास में पहले से लगे रहे हैं | चुनावों में तो यमुना एक मुद्दा बन जाती है किन्तु जब धरातल पर देखने को मिलता है तो यमुनाजी की दयनीय स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है |

श्रीबाबा– यमुनाजी के लिए ३ बार हमलोगों ने दिल्ली तक यात्रा चलाई, चौथी बार जब 'यमुना यात्रा' करने का प्रश्न आया तो लोगों ने कहा कि अब पुनः यात्रा मत उठायें क्योंकि भाजपा सरकार का यमुनाजी के लिए वादा है और उसे वह अवश्य पूरा करेगी, इसलिए हमलोग रुक गए कि भाजपा अवश्य अपना वचन निभाएगी | ब्रज से दिल्ली तक यात्रा करने में बहुत बड़ा खर्च होता है, करोड़ों रुपयों का व्यय होता है तथा इसके लिए लोगों को जुटाने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है | ऐसा सुनने में आया है कि अब सरकार द्वारा यमुनाजी के लिए कुछ कार्य शुरू किया गया है और 'भारतीय जनता पार्टी' कह रही है कि हम यमुनाजी के लिए कार्य कर रहे हैं | इसलिए हमलोग चुपचाप बैठ गए और कोई आन्दोलन नहीं किया तथा देख रहे हैं कि सरकार यमुनाजी के लिए क्या कर रही है ?

प्रश्नकर्ता– सन् २०१५ में जो 'यमुना आन्दोलन' किया गया तो आपको क्या लगता है, उसमें क्या कमी रह गई क्योंकि बहुत ही उत्साह के साथ बरसाना से लेकर दिल्ली तक 'यमुना यात्रा' की गई, जिसमें लाखों लोग सम्मिलित हुए और जिसके विशाल रूप को देखकर सरकार भी हिल गई तथा ऐसा लग रहा था कि इस बार का प्रयास अन्तिम है |

श्रीबाबा– वह आन्दोलन रुका था सरकार की गड़बड़ी से | भाजपा की ओर से सूचना प्रसारण मंत्री जंतर-मंतर पर यमुना-यात्रियों के समक्ष उपस्थित हुए और कहने लगे कि हमलोग भारतीय जनता पार्टी के हैं, इसलिए आपलोग हम पर विश्वास करिये, उनकी बात सुनकर मानमंदिर की ओर से 'यमुना-यात्रा' में सम्मिलित हुए कुछ साधुओं में फूट पड़ गई और उन्होंने कहा कि हमें भाजपा सरकार पर विश्वास करना चाहिए | जब मैंने पारस्परिक विघटन की स्थिति देखी तो मानमंदिर के यमुना-आन्दोलन के प्रबंधकों से कहा कि तुम लोग सरकार की बात मान लो, आपसी फूट नहीं होनी चाहिए | उस आन्दोलन में जो फूट हुई, उसका कारण यह था कि कुछ लोग अपना व्यक्तिगत यश चाहते थे, इसीलिए वह आन्दोलन स्थगित हो गया, दूसरा कारण था कि सरकार ने आश्वासन दिया था, तीसरा कारण यह है कि उन लोगों ने कुछ काम शुरू किया था, अतः तब से हम लोग निष्क्रिय हो गए लेकिन निष्क्रिय भी नहीं हैं, यमुनाजी के सन्दर्भ में कोई बुलाता है तो मानमंदिर के लोग चले भी जाते हैं |

प्रश्नकर्ता– ऐसा देखने को मिला कि जब यमुना-आन्दोलन हुआ, इसके लिए यात्रा की गई और आपने अपना व्यक्तिगत समर्थन देते हुए यमुनाजी के लिए जितना हो सकता था, उतना प्रयास किया | संत लोग दिल्ली गए | जब यात्रा शुरू हुई तो लोगों ने अपना व्यक्तिगत स्वार्थ देख लिया या ये कहें कि बाबा के नाम पर भुनाने का प्रयास किया ?

श्रीबाबा– साधु समाज की कुछ तो कमी अवश्य थी | साधुओं के समाज को तौलना उसी प्रकार कठिन है जैसे मेढकों को तराजू पर तौलना | एक मेढक को तराजू के पड़ले पर रखो और दूसरे को पकड़ने चलो तो पहले वाला मेढक भाग जाता है, तीसरे को पकड़ने चलो तो दूसरा मेढक भाग जायेगा, उसी प्रकार साधु समाज की एकता बनाए रखना भी मेढकों को तराजू पर तौलने के समान है | प्रत्येक महन्त अपना यश चाहता है, वह मानमंदिर का यश नहीं चाहता है | उन्हें मानमंदिर के नाम से चिढ़ है क्योंकि उन्हें लगता है कि अन्त में 'यमुना आन्दोलन' के माध्यम से रमेशबाबा का नाम होगा, इसलिए साधु-समाज में विघटन और यमुना आन्दोलन के विफल होने का एक प्रमुख कारण यह भी है – साधु समाज में कमी |

प्रश्नकर्ता– लोग ब्रज विकास की बात करते हैं, सरकार बात करती है कि हम विकास कर रहे हैं तो आपको क्या लगता है कि जो ब्रज की प्राचीन धरोहर है, 'ब्रजतीर्थ विकास परिषद' यहाँ कार्य कर रहा है, मुख्यमंत्री के नेतृत्व में कार्य हो रहा है तो वास्तविकता में ब्रज की प्राचीन चीजों को संजोकर रखा जा रहा है, उनको बचाने का प्रयास किया जा रहा है या केवल बातें ही हो रही हैं |

श्रीबाबा– इस विषय में मैंने मानमंदिर के प्रबंधक श्रीराधाकांतजी और सुनीलजी को आगे कर दिया है, ये लोग बाहर जाते हैं और इस विषय में आप इन्हीं से पूछिए कि वास्तविकता क्या है ?

प्रश्नकर्ता– जब आप ब्रजयात्रा लेकर चलते थे तो ब्रज के समस्त प्राचीन स्थल आपने देखे हैं | आपको व्यक्तिगत अनुभव है कि इस स्थान पर क्या लीला हुई है, आपने ब्रज के सम्बन्ध में आध्यात्मिक पुस्तकें लिखी हैं | आपको ब्रज का सम्पूर्ण ज्ञान है तो जब आपको जानकारी मिलती है कि ब्रज के प्राचीन स्वरूप को अब कैसा कर दिया गया है या वहाँ पर काम चल रहा है तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होती है ?

श्रीबाबा– एक बात तो यह भी है कि मैंने ब्रज के बारे में यथार्थ जानकारी उपलब्ध कराने हेतु पुस्तक लिखाने का काम किया क्योंकि ब्रज कहाँ तक है, यह लोगों को पता ही नहीं है | ब्रज चौरासी कोस कहाँ तक है, यह लोगों को पता नहीं है | अतः प्रथम बार जो इस सन्दर्भ में मैंने पुस्तक लिखवाई, वह पूरे प्रमाण के साथ लिखी गई है | ब्रजाचार्य श्रीनारायणभट्टजी द्वारा ब्रज के बारे में लिखित एक प्राचीन पुस्तक है - 'बृहद् ब्रज गुणोत्सव' - यह पुस्तक बहुत प्रयास करने के बाद भी हमें उपलब्ध नहीं हो पाई, इसके लिए मैंने १ लाख रुपये का पुरस्कार देने की भी वृन्दावन में घोषणा की थी | इस पुस्तक में ब्रज के ६ हजार गाँवों का इतिहास वर्णित है | इसकी मैंने चर्चा किया किन्तु किसी ने इस पुस्तक को लाकर हमें नहीं दिया या इसके बारे में सुना ही नहीं |

प्रश्नकर्ता– वर्तमान में जो ब्रज का विकास हो रहा है, क्या आप उससे सन्तुष्ट हैं, क्या यह विकास ठीक हो रहा है, क्या यह सही दिशा में जा रहा है ?

श्रीबाबा– हाँ, मैं इससे सन्तुष्ट तो इसलिए भी हूँ क्योंकि मैं भारतीय जनता पार्टी का विरोध तो नहीं करूँगा क्योंकि यही एक ऐसी पार्टी है जो हिंदुत्व को लेकर चलती है | ब्रज में जो विकास का कार्य हो रहा है, उसे मैंने प्रभु इच्छा पर छोड़ दिया है, जो काम हो रहा है, वह ठीक है |

प्रश्नकर्ता– मैं अगर आपसे बात करूँ तो आपको क्या लगता है कि वास्तविकता में कुछ कमी है, जैसे यदि यमुनाजी की हम लोग बात करें तो क्या इसके लिए सरकारों की इच्छा शक्ति की कमी रही, व्यक्तिगत तौर पर उन्होंने यमुनाजी का महत्व नहीं समझा, जिसके कारण सबको यमुनाजी के लिए इतना संघर्ष करना पड़ा |

श्रीबाबा– यह बात तो है किन्तु केवल मोदीजी पर आरोप नहीं लगाया जा सकता क्योंकि मोदीजी अपनी सरकार के समस्त सदस्यों को साथ लेकर चलते हैं, वह अपनी पार्टी के विरुद्ध नहीं चल सकते |

प्रश्नकर्ता– वर्तमान में जो मोदी सरकार है तो क्या आपको लगता है कि उसके द्वारा ब्रज का विकास होगा, आने वाले समय में ब्रज का एक नया रूप देखने को मिलेगा ?

श्रीबाबा– ऐसा मेरा विश्वास है, इसलिए भी हम चुप बैठे हैं |

प्रश्नकर्ता– आप ब्रज के बाहर जाते नहीं हैं, सरकार की ओर से 'पद्मश्री' पुरस्कार आपको अपने आश्रम में ही दिया गया | जब 'पद्मश्री' देने की बात आई तो कैसे आपके पास सूचना आई और जब आपको यह पुरस्कार देने के लिए दिल्ली बुलाया गया तो आपने वहाँ जाने से मना कर दिया |

श्रीबाबा– हमारे यहाँ के लोग मुझे सूचना देते रहते हैं कि आज समाचार पत्र में ऐसी खबर छपी है क्योंकि मैं तो

अखबार पढ़ता नहीं हूँ | जब 'पद्मश्री' देने की सूचना आई तो मैंने यहाँ के प्रबंधकों से कह दिया कि सरकार को मना कर दो कि मैं दिल्ली नहीं जाऊँगा | जब दिल्ली के लिए मना किया तो सरकार ने लखनऊ में बुलाया लेकिन मैंने कह दिया कि मैं ब्रज के बाहर नहीं जा सकता | जब लखनऊ नहीं गया तो 'पद्मश्री' लेने के लिए मुझे मथुरा जाने की बात भी कही गई लेकिन वे लोग समझ गए कि बाबा यह पुरस्कार लेने मथुरा भी नहीं आयेंगे, इसलिए मथुरा के जिलाधीश स्वयं यहाँ आये और मुझे 'पद्मश्री' यहीं दे गए, जब दे गए तो मैंने ले लिया | मैं किसी उपाधि के लिए तो कार्य करता नहीं हूँ | भगवान् ने गीता में कहा है – **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन |"** कर्म करो किन्तु फल की इच्छा मत रखो |

प्रश्नकर्ता– जब ब्रज छोड़ने की बात हो रही थी कि ब्रज छोड़कर नहीं जायेंगे तो यह आपने कब से सोचा कि ब्रज के बाहर नहीं जाऊँगा |

श्रीबाबा– मैं जब से ब्रज में आया हूँ तभी से, सन् १९५४ से ऐसा निश्चय कर लिया है कि ब्रज के बाहर कभी नहीं जाऊँगा |

प्रश्नकर्ता– आपकी गौशाला में इतने वृहद् स्तर पर गायों की सेवा हो रही है, गायों के लिए एक अस्पताल भी बनवाया जा रहा है, उसमें केवल गायों की ही चिकित्सा होगी अथवा अन्य जीव-जंतुओं की भी चिकित्सा होगी ?

श्रीबाबा– हम लोग कोशिश कर रहे हैं कि उस अस्पताल में गायों के अलावा मनुष्यों की भी चिकित्सा हो जाए; उसके लिए १५ से अधिक बिस्तर ऐसे बनवाए जा रहे हैं, जिसमें मनुष्यों का कैंसर का तथा अन्य बीमारियों का भी उपचार हो सके | इस तरह हम लोग कोशिश तो कर रहे हैं लेकिन पैसा देने वाला तो कोई और है, मैं तो केवल विचार रखता हूँ |

प्रश्नकर्ता– आज के समाज के लिए, विशेषकर युवाओं के लिए आप क्या सन्देश देना चाहेंगे ?

श्रीबाबा– युवा समाज संगठित हो जाए तो यह सबसे महत्वपूर्ण बात है क्योंकि आज भारतवर्ष में प्रायः आध्यात्मिकता की कमी है | हमारा युवा वर्ग विघटित है और विदेशी पश्चिमी सभ्यता से बुरी तरह प्रभावित है, इसका कारण यह है कि हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था दूषित है और यह शिक्षा केवल पेट भरने का धंधा सिखाती है | पूर्वकाल में भारतीय संस्कृति (भागवत-धर्म) के संरक्षित होने से एक आदर्श सुसंगठित समाज था |

जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी ।
जीवत सव समान तेइ प्रानी ॥ (रा.मा. बाल ११३)

जिसमें भगवान् की भक्ति नहीं है तो वह जीता हुआ मुर्दा है, इसलिए यह पशुओं का गाँव है, इसको छोड़ दो; इसको छोड़ने के बाद ही मनुष्य भगवान् की शरण में जा सकता है। चाहे माँ है, बाप है, इनकी आसक्ति करोगे तो ये फँसा लेंगे। जीते जी अमृत पियो। वह अमृत कहाँ मिलता है? भगवद्भक्तों-संतों के पास।

भक्तिहीन मानव-देह पशुवत् है। जैसे – गधे, कुत्ते शरीर धारण करते हैं, उनका जीवन केवल भोगमय होता है। तुमको इसलिए मनुष्य बनाया गया है कि अमृत पियो, अमृत क्या है? भगवान् का गुणगान। अगर कहो कि क्या खायेंगे, क्या पियेंगे, यदि दिन-रात भजन करेंगे? अरे तुम जानते नहीं हो, जिसने भक्ति रूपी अमृत पी लिया तो उसके देह-धर्म का निर्वाह अपने-आप होगा। *'प्रणत कुटुंब पाल रघुराई।'* भगवान् 'शरणागत जनों' का पालन-पोषण करते हैं।

भागवत-धर्म का वास्तविक स्वरूप

कनाडा में टी.वी. चैनल से साध्वी मुरलिकाजी की वार्ता

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी गोपालीजी, मानमन्दिर, बरसाना

मुरलिकाजी– अधिकतर आज २५ साल तक के युवाओं को देख लो, शुरू से उनका चरित्र कलंकित हो जाता है | जबकि चरित्र एक ऐसी चीज है जिसके बारे में अंग्रेजी में भी कहा गया है –

WEALTH IS LOST NOTHING IS LOST. HEALTH IS LOST SOMETHING IS LOST. BUT IF CHARACTER IS LOST, EVERYTHING IS LOST.

यदि धन समाप्त हो गया तो कुछ नष्ट नहीं हुआ | स्वास्थ का नाश हुआ तो कुछ नष्ट हुआ किन्तु यदि चरित्र का विनाश हो गया तो सर्वस्व-विनाश हो गया | यदि चरित्र चला गया तो कितनी बड़ी यह हानि है | आजकल माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने, उनको एक अच्छे पद पर देखने में बड़ा प्रसन्न होते हैं किन्तु आपने उन्हें चरित्र क्या दिया, आपने उनको संस्कार क्या दिये? माता तो बालक की सबसे पहली गुरु है | बच्चा तो ४-५ वर्ष की आयु होने पर पढ़ने के लिए स्कूल जाता है, आपने अपने बच्चों को शुरू से ही क्यों नहीं सँभाला-सँवारा? आप अपने लड़कों को क्यों नहीं सिखाते हो कि चरित्रनाश कितना बड़ा अपराध है | समवयस्क बालिका के प्रति बहन का भाव अथवा नारीमात्र के प्रति मातृभाव या बड़े हो तो बेटी का भाव अपने लड़कों के अंदर आप क्यों नहीं जागृत करते हो? इसलिए कहीं न कहीं आज माता-पिता ही बच्चों की दूषित शिक्षा के लिए दोषी हैं | फिर आगे चलकर तो उनकी शिक्षा और अधिक दूषित हो जाती है | जैसे ही वे कॉलेज-विश्वविद्यालय में जाते हैं तो वहाँ तो दु:संग की भरमार हो जाती है | कुसंग की भरपूर मात्रा उन्हें वहाँ मिलती है | फिर वही लड़के आगे चलकर डाकू बनते हैं, बलात्कारी बनते हैं, शोषणकारी भी बनते हैं | इसलिए कहीं न कहीं जितनी भी विकृति है, उसका मूल कारण है - शिक्षा | हमारी शिक्षा बहुत अधिक दुष्प्रभावित हो रही है | इसलिए शिक्षा में सुधार की अत्यधिक आवश्यकता है |

प्रश्नकर्ता – ये आपने बहुत अच्छा कहा, यदि इसका प्रचार किया जाए तो लोग शायद समझेंगे लेकिन आज भय के साथ जब यह काम किया जा रहा है तो भारत में लोगों के अंदर अलग तरह की सोच पनप रही है कि हम भगवाकरण की बात कर रहे हैं | कोई भी व्यक्ति यह नहीं कहेगा कि इसे न करो क्योंकि इसमें सबकी भलाई है | आज हर कोई बच्चों के लिए चिंतित है लेकिन जिस तरह से यह हो रहा है तो क्या भारत में यह सोच लोगों के अंदर आ रही है, क्या वे इन विषयों पर चिंतित हैं या अभी भी उनकी प्रवृत्ति है कि हमें इससे क्या लेना-देना, हमारा तो इतना ही प्रयोजन है कि हमारा काम चलता रहे | चूँकि आप हर जगह प्रचार के लिए जाती हैं, लोगों से मिलती हैं तो ये सवाल आपके मन में बार-बार आते होंगे, आपका इस बारे में क्या कहना है कि कैसे ये संस्कार अपने बच्चों में, अपने घरों से यह बात शुरू की जाए ताकि एक अच्छा समाज बनाया जा सके |

मुरलिकाजी– हम तो अपने यहाँ से देख रहे हैं | हमारे पूज्य गुरुदेव की कृपा से श्रीमानमंदिर में जो प्रचारक तैयार किये गये हैं, छोटे-छोटे बच्चे प्रचारक हैं | एक छोटी उम्र का बच्चा जब प्रचारक होता है तो सबका उसके प्रति आकर्षण सहज होता है और इतने विशुद्ध माहौल में पले-बड़े वे बच्चे हैं, उन्हें स्कूल भी नहीं भेजा जाता, आश्रम में गुरुकुल में ही पढ़ाया जाता है, जिससे बाहरी संस्कारों का उनके ऊपर प्रभाव न पड़े | ये बच्चे ऐसे प्रचारक बनते हैं कि इन्होंने ३५ हजार गाँवों में प्रचार किया, कितने ही गाँवों में इन्होंने शराब छुड़वा दी, दुर्व्यसन से ग्रसित अनेकों गाँवों में लोगों को इन्होंने बुरी लतों (वैषैयिक आदतों) से बाहर किया | छोटे-छोटे प्रचारकों ने ही लोगों के जीवन बदल दिये | यह प्रचार हम लोग अपने स्तर से

जितना कर पा रहे हैं, उतना कर ही रहे हैं | बाकी माता-पिताओं को हम ये संदेश देना चाहेंगे कि अपने बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दें, संस्कारों पर ध्यान दें | शिक्षा के अलावा जो दूसरी तरह से हमारी हानि होती है, वह होती है राजनैतिक स्तर से क्योंकि क़ानून व्यवस्था बहुत गड़बड़ है | आज भारत में १ घंटे में कितने बलात्कार हो जाते हैं, जिनमें से कभी-कभी एकाध बार कोई खबर मीडिया में आती है तो लोग उसके बारे में सोचना शुरू करते हैं, सोचने के बाद वह भी इस हल तक पहुँचते हैं कि १० दिन के लिए उसको जेल हुई, फिर उसको छोड़ दिया जाये | ऐसा व्यक्ति तो फिर से अपराध करेगा ही करेगा | वस्तुतः भारत में राजनैतिक व्यवस्था ही इतनी भ्रष्ट है कि जिसके कारण समाज में कोई सुधार लाना भी चाहे तो लाने में बड़ी मुश्किल होती है | अच्छे लोगों को ही विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है | दुष्टों को कोई हानि नहीं है, वे तो अपराध करके चले जायेंगे और फिर करेंगे | चूँकि ऊपर से नीचे तक सारी शासन व्यवस्था ही भ्रष्ट है | इस समय तो हमारे देश का सौभाग्य है कि अच्छा नेतृत्व मिला है, अच्छा कर्णधार मिला है, मोदीजी जैसे शासक मिले हैं लेकिन उनके नीचे भी सभी लोगों को अपनी मानसिकता में, अपनी विचारधारा में परिवर्तन लाने की जरूरत है क्योंकि यदि आप अपने राष्ट्र हित की बात सोचते हो तो फिर आप लोगों को अपनी मानसिकता, अपनी विचारधारा तो निश्चित रूप से बदलनी होगी; उसका मूल है - शिक्षा | हम बच्चों को ठीक शिक्षा दें | दूसरी बात मैं यह कहना चाहूँगी कि आज जो धर्म के नाम पर इतना गलत कार्य हो रहा है क्योंकि ये बातें केवल आम जनता की ही नहीं हैं बल्कि बड़े-बड़े धर्माचार्यों के बारे में भी सुना जाता है कि उनके द्वारा आज ऐसे काण्ड हो गये कि जिससे साधु-समाज पर बहुत गलत प्रभाव पड़ता है | फिर लोग ये नहीं सोचते कि सब साधु एक जैसे नहीं होते, फिर उनकी एक ही दृष्टि में मापतौल होने लग जाती है | श्रीमद्भागवत में तो साक्षात् शेषावतार श्रीदाऊ जी महाराज ने कहा है | प्रसंग उस समय का है जब नैमिषारण्य में सूतजी ऋषियों की सभा में पुराणों की कथा कह रहे थे, दाऊजी आये तो सूतजी उनके सम्मान में खड़े नहीं हुए तो दाऊजी ने वहाँ उनका वध कर दिया और वहाँ दाऊजी ने स्वयं कहा – **"वध्या मे धर्म ध्वजिनस्ते हि पातकिनोऽधिकाः |"** (श्रीमद्भागवतजी १०/८७/२७) जो धर्म की ध्वजा धारण करके अधर्म का ही बोलबाला कर रहा है, वह वध्य (मार देने योग्य) है, उसको जीने का ही अधिकार नहीं है | दाऊजी ने तुरंत उस कथावाचक का वध कर दिया | मैं यह तो नहीं कहूँगी कि आप भी ऐसी हिंसा शुरू कर दो या किसी को मार दो | ये तो मैं नहीं कहूँगी लेकिन इतना मैं अवश्य कहूँगी कि साधारण लोगों के अंदर इतनी बुद्धि होनी चाहिए, भगवान् ने हमें मनुष्य शरीर दिया है, विवेक दिया है तो पहले हम किसी धर्म प्रचारक या उपदेशक को अच्छी तरह जानें, परखें तब उसको समर्पण करें | एक समय ऐसा था कि भारत का प्रत्येक घर सत्संग करता था | भारत की प्रत्येक माता यह सोचकर संतान उत्पन्न करती थी कि मेरा बालक होनहार होगा, देशभक्त होगा, देश का कल्याण करेगा, युग- परिवर्तन करेगा लेकिन आज हमलोगों ने उसको अपना विकास नहीं समझा, आसुरी शिक्षा को पढ़ना ही हमलोगों ने विकास समझ लिया है, उसके कारण बच्चों का स्वभाव आसुरी हो गया | अब यह तो आधुनिक युग की माँग है कि आधुनिक पढ़ाई भी आपको पढ़नी होगी, उसका हमारी ओर से कोई खण्डन नहीं किया जा रहा है पर इसके साथ-साथ आपको अपने शास्त्रों का भी अध्ययन करना चाहिए | आज हिन्दुओं के घर जाओ तो उनके यहाँ गीता देखने को नहीं मिलती, रामचरितमानस देखने को नहीं मिलता | जब तक रामचरितमानस नहीं पढ़ोगे तब तक आपको कैसे पता चलेगा कि रामराज्य क्या था, राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न में कैसा प्रेम था | आप जब तक रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र नहीं पढ़ोगे तो वीर कौन है, शौर्य क्या है, यह आपको कैसे पता चलेगा | समस्या ये है कि आज हिन्दुओं के घरों में शास्त्र नहीं हैं | मैं यह कहना चाहूँगी कि यदि

आप हिन्दू हैं, वैष्णव हैं, भारतीय हैं तो कम से कम तीन ग्रन्थ हर हिन्दू को अपने घर पर रखना चाहिए - श्रीमद्भागवतजी, श्रीगीताजी और श्रीरामचरितमानसजी, साथ ही साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है 'श्रीभक्तमालजी' | आज से ४००-५०० वर्ष पूर्व जो भक्त हुए हैं, पौराणिक लाखों वर्ष पूर्व हुए भक्त नहीं, जो अभी इसी कलिकाल में भक्त हुए हैं, उनका जीवन कैसा था, वह युग भक्तियुग कहा जाता है; उस समय श्रीमीराबाईजी, श्रीसूरदासजी और गोस्वामी तुलसीदासजी आदि महान भक्त अवतरित हुए | कोई समय था जब भारत के स्कूल-कॉलेजों में सूर, तुलसी, कबीर आदि महापुरुषों के पद पढ़ाये जाते थे | आज उनके पदों को पाठ्यक्रम से हटा दिया गया है | भारत में अभी भी कुछ जिले ऐसे हैं, जिनमें उर्दू पढ़ना अनिवार्य बना दिया गया है जबकि संस्कृत को कुचल दिया गया है | हिंदी भाषा अनिवार्य नहीं है, उर्दू पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया है; ऐसी बातें हो रही हैं, यही बातें तो बच्चों के अन्दर नींव डाल रही हैं, संस्कार डाल रही हैं | हमारे आश्रम में एक स्कूल है - रासेश्वरी विद्या मंदिर, इसमें आस-पास के गरीब बच्चों को शिक्षा दी जाती है, इस स्कूल में लगभग ८०० बच्चे हैं |

प्रश्नकर्ता– इस विद्यालय में किस प्रकार की पढ़ाई होती है, कृपया करके बतावें |

मुरलिकाजी– हमारे यहाँ बरसाना,गह्वरवन में रासेश्वरी विद्या मंदिर नामक बच्चों का विद्यालय है, जिसमें ८०० बच्चे पढ़ते हैं, उसमें उनको नियमित भक्तिमय शिक्षा भी दी जाती है और यह स्कूल इस बात का आदर्श है कि आप नियमित शिक्षा के साथ-साथ भी बच्चों के संस्कारों को कैसे सुसज्जित रख सकते हैं | इस स्कूल का जो पहला पीरियड होता है उसका नाम है - प्रह्लाद सभा, एक घंटे तक उस पीरियड में बच्चे भक्त-चरित्र कहते हैं, सुनते हैं; सूर, तुलसी, मीराजी आदि महापुरुषों के पद गाते हैं; इसमें उनका संगीत भी आ गया, उनका संस्कार भी आ गया, उनका चरित्र भी आ गया | उन्हें अपने भारतीय आदर्श नायकों के विषय में भी ज्ञान हो जाता है; इस तरह एक घंटे तक उनको यही शिक्षा दी जाती है | इसके अतिरिक्त छोटी-छोटी अन्य विशेषताएँ भी हैं, जैसे - जब इस स्कूल में अटेन्डेन्स होती है तो बच्चे प्रेजेंट सर, मैडम न बोलकर 'जय श्री राधे' अथवा 'जय श्री कृष्ण' बोलते हैं; ये छोटी-छोटी चीज़े हैं लेकिन बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़े हुए हैं, संस्कार से जोड़े हुए हैं, बाकी समय में नियमित पढ़ाई होती है, इस तरह से बच्चों के भक्तिमय संस्कार नष्ट नहीं होते हैं, शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी बने रहते हैं | मैं ये कहना चाहूँगी कि कम से कम ये ग्रन्थ जैसे – 'गीता, रामायण, भागवत, भक्तमाल' हर हिन्दू को, हर भारतीय को अपने घर में रखना चाहिए | चौबीस घंटे में कोई समय १५-२० मिनट के लिए ऐसा निकालो कि जिसमें माता-पिता अपने बच्चों को आदर्श नायकों, महापुरुषों के बारे में बतायें, उन्हें सुनायें, पढ़ायें कि कैसे प्राचीन भारत में भाई-भाई में प्रेम होता था, कैसे आदर्श भाई होते थे, कैसी आदर्श मातायें होती थीं, कैसी आदर्श स्त्रियाँ होती थीं, आदर्श वीर होते थे, बलिदानी लोग होते थे; जब तक बच्चे इन बातों को जानेंगे नहीं तो निश्चित है कि वे इन संस्कारों से दूर हो जायेंगे | घर से ही बच्चों को इस तरह की बातें सिखाई जानी चाहिए जो हमलोग शुरुआती तौर पर कर सकते हैं और वह आज नहीं हो रहा है, वही इस विनाश का मूल कारण है |

प्रश्नकर्ता– यह आपने बहुत महत्वपूर्ण बात कही कि घर के अंदर से ही ये बात शुरू होनी चाहिए | एक माँ को आदर्श माँ बनना होगा, एक पिता को वास्तविक पिता के फर्ज अदा करने होंगे | आज जो हमारी दौड़ है, उसके अंदर धर्म को एक कोने में रख दिया गया है कि हफ्ते में एक दिन हम मंदिर चले जाएँगे, पाठ-पूजा कर लेंगे, अगर उसके अंदर जो भी सुख-दुःख है, जो भी क्रियाएँ हैं, उसको हम पूरा कर लेंगे तो धर्म के प्रति हमारी जवाबदारी पूरी हो जाएगी लेकिन जब धर्म को हम देखते हैं कि अब हर एक व्यक्ति संत नहीं बन सकता, न ही संत है लेकिन प्रेरणा जरूर ले सकता है | आपने उदाहरणों की बात कही कि जिस भी स्थिति में कोई है तो आपका कहना है कि

वह धर्म के मूल सिद्धांतों को ग्रहण करे तो स्वाभाविक रूप से उसमें परिवर्तन आ जाएगा | इसके अलावा भी आपके अन्य क्या विचार हैं, जैसा कि आप देख रही हैं कि आज समाज में और क्या-क्या करने की जरूरत है ?

मुरलिकाजी– जैसा कि आपने कहा कि आजकल लोग सप्ताह में एक बार मंदिर जाने से ही अपने को धार्मिक समझ लेते हैं और संतुष्ट हो जाते हैं | देखिये, जब तक जीवन में नियमितता (panctuality) नहीं है तब तक कुछ नहीं होगा | बिना नियमितता के तो शरीर भी कार्य नहीं करेगा, जैसे - हृदय की धड़कन है, नाड़ी है, ये सब नियम से अपना काम कर रही हैं, अगर वे भी एक दिन का विराम ले लें तो आदमी का अच्छा खासा विराम हो जाएगा | एक साधारण-सी बात है कि शरीर को चलाने के लिये भी नियमितता चाहिए | हमारे जीवन में जैसे खाना-पीना, सोना, उठना-बैठना, व्यवहार-व्यवसाय जो नियमित हैं, उसी प्रकार धर्म को भी जीवन का एक अनिवार्य अंग बनाना चाहिए | इसके लिए जरूरी नहीं है कि आप प्रतिदिन मंदिर ही जाओ | स्वाभाविक-सी बात है यदि मंदिर आपके घर से आधे घंटे या एक घंटे की दूरी पर है तब आप कोशिश करेंगे कि छुट्टी के दिन ही मंदिर जाया जाय, ऐसे न जा पायें | भले ही आप मंदिर न जायें किन्तु आपके घर में कुछ नियम होना चाहिए आधे घंटे का, चाहे उस समय आप नाम-जप, पाठ करें, नाम-संकीर्तन करें, बल्कि हमारे ग्रंथों में तो धर्म की इतनी सुंदर परिभाषा लिखी है - **करोति यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत् ॥** (श्रीमद्भागवतजी- ११/२/३६)

अर्जुन के लिए तो युद्ध करना भी धर्म बन गया, अर्जुन कौन-से मंदिर में गये थे फिर भी उनके लिए युद्ध ही धर्म हो गया | हमारे जो सामान्य कर्तव्य हैं, सामान्य क्रियाएँ हैं, उनको भी हम धर्म का स्वरूप दे सकते हैं यदि उनका लक्ष्य पवित्र हो जाए, उन क्रियाओं का लक्ष्य यदि भगवान् की प्रसन्नता हो जाए, उन क्रियाओं का लक्ष्य यदि भगवान् हो जाए तब साधारण से साधारण क्रिया को भी हम धर्म बना सकते हैं | इस समय योगी, तपस्वी, ध्यानी मिलेंगे नहीं, सबके शरीर तामसी हो गये हैं, शरीर में भी उतनी क्षमता नहीं रह गयी | सतयुग में लोग तपस्या करते थे, कलियुग में वह भी संभव नहीं है | पाश्चात्य देशों में जाओ तो लोग कहते हैं कि यहाँ बहुत fast life है, बहुत तेज जीवन है, देखने में भी आता है कि वहाँ के लोग बेचारे सबेरे से शाम तक मशीन की तरह काम करते हैं; ऐसे में इतना ही हो सकता है कि आप चलते-फिरते, उठते-बैठते जितना भी हो सके, भगवान् का नाम स्मरण करो | शास्त्रों में लिखा है –

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् |
कलौ नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ||

भगवन्नाम ही कलियुग में कल्याण का एकमात्र साधन है | मैं सभी दर्शकों को यही सन्देश देना चाहूँगी कि आप अपना कोई भी कार्य कर रहे हैं तो आपको जिह्वा से नाम उच्चारण करते रहना चाहिए | इसके लिए आपको विशेष आसन की जरूरत नहीं है, विशेष स्थान की जरूरत नहीं है, विशेष स्थिति की जरूरत नहीं है | नामोच्चारण तो आप कभी भी और कहीं भी कर सकते हैं | अपने जीवन में सभी लोग भगवन्नाम का आश्रय अवश्य लें | जितना अधिक से अधिक हो सके, उसका लाभ लें |

प्रश्नकर्ता– जैसा कि आपने कहा, नाम-सुमिरन की बहुत अधिक महत्ता है | हमेशा हमें भगवान् को याद करने की जरूरत है लेकिन नाम-जप का स्वरूप क्या है, क्या केवल नाम को जपना है जैसे आपका नाम मुरलिका है और मैं मुरलिका-मुरलिका करे जा रहा हूँ, क्या यह नाम जप है या आपके जो गुण मैंने देखे हैं, आपसे बात कर रहा हूँ, सहजता से आप बोल रही हैं, आपके पास ज्ञान है, उन चीजों को याद करके मैं उन सबको ग्रहण करने की कोशिश करूँ, इसके बारे में ग्रन्थ क्या कहते हैं कि नाम-सुमिरन क्या है ?

मुरलिकाजी– देखिये, जप तीन प्रकार का होता है | एक होता है मानसिक जप, एक होता है उपांशु जप, एक होता है - वाचिक जप | मानसिक जप वह है जब हम अपने मन में नाम स्मरण कर रहे हैं, उपांशु जप वह है जिसमे होंठ

हिलते हैं परन्तु नाम सुनाई नहीं देता है, इसके आगे होता है 'वाचिक जप' | वाचिक जप को सबसे श्रेष्ठ कहा गया है | चाहे राम नाम है, चाहे कृष्ण नाम है, कोई भी नाम है तो वाचिक जप वह है कि जब हम जप करें तो वह हमें सुनाई दे, उसमें सबसे बड़ा लाभ यह है कि मन एकाग्र (concentrate) होता है, एक जगह स्थिर होता है | केवल माला लेकर आप जप कर रहे हैं और मन इधर-उधर भटक रहा है, उससे अच्छा है कि जो आप बोल रहे हैं, उसको आप सुन भी सकें, इतना ध्यान से नाम बोलें और सुनें, उससे मन का एकाग्र होना शुरू हो जाता है | कोई भी कार्य है जब तक उसमें मन का योगदान नहीं है तो गीता में भगवान् ने कहा – **मिथ्याचारः स उच्यते** - वह केवल दंभ है, पाखंड है | कोई भी कार्य है, उसमें मन का लगना बहुत जरूरी है | ये तो अच्छी बात है कि राम-कृष्ण के आदर्श को सीखें पर राम-कृष्ण के आदर्श हमेशा याद रहें, इसके लिए हमें राम-कृष्ण नाम का स्मरण करना पड़ेगा | हमें चलते-फिरते हुए राम-कृष्ण का आदर्श याद नहीं रहेगा, उसके लिए नाम-स्मरण रूपी एक साधन बताया गया है | नाम-स्मरण के माध्यम से रामजी आपको सदा याद रहेंगे, नाम-स्मरण के माध्यम से श्रीकृष्ण आपको सदा याद रहेंगे और जब वे आपको याद रहेंगे तभी आपको उनके आदर्श भी याद रहेंगे, इसलिए वाचिक जप सबसे श्रेष्ठ है | १०-२० मिनट जहाँ भी समय मिल जाए, उस समय उच्च स्वर से नाम-संकीर्तन करिये और अपने मन को एकाग्र बनाने की कोशिश करें |

प्रश्नकर्ता – आखिर में एक सवाल यह कि आजकल लोगों के मन में आम धारणा यह है कि मैं जो चाहे करूँ, अपनी मर्जी से कमाई करूँ, चाहे वह किसी की जेब काट कर करूँ या जो मर्जी में आये करूँ और अंत में किसी संत के पास आकर माथा टेकूँ और कुछ माया (धन) उसके आगे अर्पण कर दूँ और वह संत मुझे आशीर्वाद दे दें तो सब ठीक हो जाएगा, ऐसी सोच (विचारधारा) आजकल बहुत प्रचलित है | इसके बारे में हमारे ग्रन्थ क्या कहते हैं, क्या इस प्रकार से हमारी सद्गति हो सकती है ?

मुरलिकाजी – इस बात को केवल वे ही लोग कहेंगे जिन्हें केवल धन से मतलब है, चाहे वह धन किसी भी तरह आया हो क्योंकि हमारे ग्रंथों में तो ऐसे-ऐसे उदाहरण हैं, जैसे - एकबार गोसाईं विट्ठलनाथजी के पास दो वेश्याएँ गयीं अपना जीवन भर का कमाया हुआ धन लेकर | गोसाईंजी ने उनसे कहा कि यह द्रव्य दैवी-कार्य के उपयुक्त नहीं है | तुमलोग इसे ले जाओ और जहाँ लगाना हो लगाओ | मैं तो इसे भगवत्सेवा में नहीं लगा सकता हूँ | ५०० साल पहले वे वेश्यायें ९ लाख स्वर्ण मुहरें गोसाईंजी को भेंट करने गयीं थीं | इतनी अधिक मुहरों का कितना अधिक मूल्य होता है परन्तु गोसाईंजी ने इसे स्वीकार नहीं किया किन्तु वहाँ एक भण्डारीजी थे, उसने कहा - कोई बात नहीं, अभी इसे हम रख लेते हैं, अभी नहीं तो आगे भविष्य में यह धन काम आएगा, ऐसा कहकर उस धन को मंदिर की दीवार में चिनवा दिया | ६० साल बाद उस मंदिर में औरंगजेब ने आक्रमण किया, मंदिर भी ध्वस्त हुआ, धन गया तो गया, उसके कारण मंदिर का भी विनाश हो गया | इसीलिए हमारे यहाँ संतों ने कहा है –

हत्या हत्या सब कहें, हत्यारे न डराहिं |
बड़े हत्यारे सोई जानिए, जो हत्यारे को खाहिं ||

हत्या करने वाला तो हत्यारा है ही, उससे बड़ा हत्यारा वह है, जो हत्यारे का खा रहा है | जैसे - महाभारत में स्वयं विदुरजी ने धृतराष्ट्र से कहा है कि ऐसा नहीं है कि आप दो नंबर की कमाई करो और फिर सोचो कि उस धन को हम धर्म में लगा देंगे तो काला धन 'सफ़ेद धन' हो जाएगा | शास्त्र के अनुसार ऐसे धन को धर्म में लगाने के सत्कर्म का तो लाभ तुमको मिलेगा नहीं और तुमने जो दुष्कर्म किया, उसका भी दोगुना दोष तुमको भोगना पड़ेगा | इन सिद्धांतों को गलत ढंग से वे ही लोग पेश करेंगे जिनको धन का कोई लोभ होगा, जिन्हें कोई स्वार्थ होगा; ऐसे ही लोग सिद्धांतों को इस प्रकार रखते हैं | वस्तुतः धन (अर्थ) का, अन्न का हमारे चित्त पर बहुत विशेष प्रभाव पड़ता है | जो सद्द्रव्य है, दैवी द्रव्य या अच्छा द्रव्य है, उसी का उपयोग सत्कार्यों में किया जाता है |

'भारतीय विद्यालयों' पर कान्वेंट स्कूलों का कुप्रभाव

स्वदेशी आन्दोलन के प्रणेता 'स्वर्गीय राजीवदीक्षितजी' की वाणी से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी कृष्णप्रियाजी, मानमन्दिर, बरसाना

(गतांक से आगे) - यूरोप में father's day मनाया जाता है, इसका क्या रहस्य है ? पहली बात तो यूरोप में बच्चे घर पर नहीं रहते हैं, यदि गलती से किसी ने रख लिए तो उन बच्चों को अपने पिता के साथ भोजन की मेज (dining table) पर बैठकर खाना खाने का अधिकार नहीं है | भोजन की मेज पर अपने पिता के साथ वे नहीं बैठ सकते | पिता अपनी भोजन की मेज पर दूसरों के साथ भोजन करेगा, जब दूसरा व्यक्ति भोजन करके चला जायेगा तब बच्चे भोजन की मेज पर बैठते हैं लेकिन ये यूरोपियन लोग वर्ष में एक दिन ऐसा निर्धारित करते हैं कि जब बच्चे अपने पिता के साथ भोजन की मेज पर बैठते हैं, उस दिन वे फादर्स डे (पिता का दिन) मनाते हैं; इस तरह से इन लोगों के फादर्स डे, मदर्स डे, ब्रदर्स डे, सिस्टर्स डे अथवा वेलेंटाइन डे मनाने के पीछे कुछ कड़वी घटनाएँ हैं परन्तु हम भारतीय लोग बिना कुछ सोचे-समझे अंधे की तरह इनकी परम्पराओं को मनाने लगते हैं | कई बार देखा गया है कि जयपुर और अजमेर जैसे शहरों में 'मदर्स डे' पर रैली निकाली जाती है | अपने हाथों में कार्ड लेकर बच्चियाँ जाती हैं, उस दिन उनके स्कूल कॉलेजों की छुट्टी कर दी जाती है और यह सब महामूर्ख सरकारी अधिकारी किया करते हैं, 'फादर्स डे' पर रैली निकालते हैं, फिर 'मदर्स डे' पर रैली निकालते हैं | 'मैकाले' ये सब यूरोप की तमाशेबाजी को हमारे देश में छोड़ गया, वह बार-बार यही कहता था कि हमें भारतीयों को अपने संस्कार देने हैं, शिक्षा दे पायें या न दे पायें, यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, अंग्रेजियत का संस्कार भारतीयों को अवश्य देना है और वह दे गया और यह संस्कार हमलोगों के रक्त में प्रवेश कर गया तथा इतना गहराई से प्रवेश कर गया है कि समझ में नहीं आता है कि ये संस्कार कैसे बाहर निकलेगा? अब देखा जाता है कि भारतीयों के घरों में ऐसा रिवाज हो गया है कि माता का नाम होता है - गायत्री देवी, पिता का नाम - रामदयाल और बेटे का नाम होता है - टिन्कू, अब उनसे पूछा जाय कि रामदयाल और गायत्री देवी का पुत्र 'टिन्कू' कहाँ से आ गया | ऐसे ही रामदयाल और गायत्रीदेवी की बेटियों के नाम होते हैं - डिम्पल, बबली, डबली | बबली-डबली का क्या अर्थ है, किसी को कुछ पता नहीं, बस नाम ऐसे बेहूदे रख दिए गए हैं; इस तरह अंग्रेजियत हमारे घरों में घुस गयी है | हम लोग भारतीय हैं किन्तु प्रतिदिन अपने घरों में किसी व्यक्ति को अपनी पत्नी का परिचय देते हुए कहते हैं - o, sir ! she is my mrs.(श्रीमानजी, वह मेरी मिसेज है) जबकि यूरोप में मिसेज का मतलब होता है - धर्मपत्नी को छोड़कर कोई भी महिला | भारतीय घरों में किसी पुरुष की धर्मपत्नी किसी को अपने पति का परिचय देते हुए कहती है - he is my mr.(वह मेरे मिस्टर हैं) यूरोप में मिस्टर का अर्थ होता है - पति को छोड़कर कोई भी पुरुष | miss (मिस) तो बहुत ही खराब शब्द है | miss फ्रेंच शब्द है | miss का अर्थ है - जो जीवनभर वैश्यावृत्ति करे, विवाह न करे, वह miss कहलाती है | हम भारतीय लोग बड़े गर्व से लिखते हैं - मिस रमा, मिस विमला..आदि-आदि, बिना सोचे समझे ऐसा किया करते हैं | यूरोप में सबसे खतरनाक शब्द है 'अंकल' क्योंकि जिसके बारे में आपको कुछ बताना ही न हो, उसको अंकल बोल दो | जिस महिला के बारे में कुछ बताना नहीं हो, उसको आंटी बोल दो | भारत में 'अंकल-आंटी' कैसे हो सकते हैं? या तो चाचा होंगे या काका होंगे अथवा मामा होंगे, मौसा होंगे, सब सम्बन्ध हमारे यहाँ बिलकुल निश्चित हैं, लेकिन 'अंकल' तो बहुत अनिश्चित शब्द है, 'आंटी' तो और भी अधिक | मैकाले अपनी काली नीच संस्कृति इस देश में छोड़ गया तो हमने अपने बच्चों से 'माँ' को मम्मी बुलवाना शुरू कर दिया, 'पिता' को डैडी बुलवाना शुरू कर दिया | मम्मी का मतलब है - 'मरा हुआ' और 'डैडी' का अर्थ है – 'मरे हुए जैसा' | लेकिन भारतीय लोग बड़े शौक से अपने बच्चों से अपने को 'मम्मी-डैडी' बुलवाते हैं | यूरोप की

वेशभूषा भी भारत के कान्वेंट में घुस गई | यूरोप में लोग टाई लगाते हैं, सूट पहनते हैं क्योंकि वहाँ ठण्ड बहुत है | भारत में तो अत्यधिक गर्म तापमान वाले इलाकों में भी लोग टाई लगाते हैं और सूट पहनते हैं; इस प्रकार हमारी भाषा बदल गयी, वस्त्र बदल गए, भोजन बदल गया | कान्वेंट स्कूलों से बच्चे सीखते हैं - पिज्जा खाओ, बर्गर खाओ, हाट डॉग खाओ, कोल्ड डॉग खाओ, चाउमीन खाओ, नूडल्स खाओ; यूरोपियन का भोजन, उनकी भाषा, उनके वस्त्र और उनका संगीत-रॉक म्यूजिक, पॉप म्यूजिक सब कुछ भारतीय समाज में घुस गया है, इसने सारा मामला चौपट कर दिया | न हम भारतीय रह पाये, न अंग्रेज रह पाए; अगर कोई सभ्यता खिचड़ी बन जाए तो उसका भविष्य खराब होता है; इस अधकचरेपन ने हमारी पीढ़ियों को ख़त्म कर दिया है | यूरोप से आये अंग्रेजियत के शिक्षा-तंत्र ने क्या किया हमारे देश में, इसके कुछ अन्य उदाहरण भी हैं, जैसे - कान्वेंट स्कूलों में कुछ किताबें पढ़ाई जाती हैं, उनमें बिलकुल स्पष्ट बच्चों को पढ़ाया जा रहा है, सुनाया जा रहा है कि भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि आतंकवादी थे और महाराजा रणजीत सिंह तो लुटेरे थे | पंजाब के बहुत प्रतिष्ठित राजा हुए हैं रणजीत सिंह, जिन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया और मुसलमानों से भी इस देश को बचाया, उनको लुटेरा बताया जा रहा है कान्वेंट की किताबों में | भारत की एक जाति है जिसको 'जाट' कहते हैं, जाटों के बारे में अंग्रेज कहा करते थे कि इनकी ताकत बहुत अधिक है, इसलिए उन्होंने 'जाट रेजिमेंट' बनाया | जाटों की तरह महाराष्ट्र में हैं – मराठा, ये भी एक तरह से जाट ही हैं, इसलिए अंग्रेजों ने 'मराठा रेजीमेन्ट' बनाया, 'जाट रेजीमेन्ट' बनाया क्योंकि इनमें ताकत बहुत है, इनका 'डी. एन. ए.' बहुत विशेष किस्म का है, लड़ने-लड़ाने, मरने-मारने में इन्हें मजा आता है, ये लोग कभी भी अपनी जान की परवाह नहीं करेंगे, किसी के लिए भी अपनी जान दे देंगे; ऐसे जाटों के बारे में कान्वेंट स्कूलों में पढ़ाया जा रहा है कि वे अंग्रेजों के खरीदे हुए गुलाम हैं | कान्वेंट स्कूलों के बच्चे बार-बार इस तरह की झूठी बातें पढ़ रहे हैं, प्रतिदिन पढ़ रहे हैं तो थोड़े दिनों में वे मान ही लेंगे कि भगतसिंहजी, सुभाषचन्द्रजी आतंकवादी थे क्योंकि एक झूठ को यदि आप बार-बार कहोगे तो दस-बीस सालों में लोग उसे सत्य मान लेंगे | एक कान्वेंट स्कूल की किताब में लिखा है कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने भारत की आजादी के लिए कुछ नहीं किया और उनके जीवन-चरित्र के बारे में लिखा है कि वह एक अंग्रेज अधिकारी 'जॉन लेक' के प्रेम में जीवन भर फँसी रहीं; ऐसी झूठी-मनगढ़ंत बातें कान्वेंट स्कूलों में पढ़ाई जा रही हैं भारत के परम देशभक्त शहीदों को बदनाम करने के लिए | अब तो यह हो गया है कि कान्वेन्ट स्कूलों के द्वारा बनाये गए शिक्षा के पाठ्यक्रम को भारत सरकार ने सारे देश का (syllabus) पाठ्यक्रम बना दिया है | अब इस बात पर संसद में भले ही कितना हंगामा हो लेकिन सरकार कहती है कि सत्य तो यही है क्योंकि ऐसा अंग्रेजों ने लिखा है | कांग्रेसी सरकारों के प्रधानमन्त्री यही कहा करते थे कि वास्तविक सत्यवादी तो अंग्रेज ही हैं जो हमें ये सब सिखा गये, ऐसी दयनीय स्थिति हमारे देश की है | हम भारतीय लोगों को गंभीरतापूर्वक इस विषय पर विचार करना चाहिए और स्वदेशी सनातन संस्कृति की आध्यात्मिक-शिक्षा-पद्धति को अपनाकर उसका सम्यक् प्रचार-प्रसार करें | यूरोप आदि की पाश्चात्य-सभ्यता (भक्तिहीन कुसंस्कृति) जो हमारे देश में जड़ जमाकर बैठ गयी है, उससे बिल्कुल बचने का निरन्तर संप्रयास करें | भारत में जो कान्वेंट स्कूल चल रहे हैं, इनके पास सबसे अधिक भूमि हैं | एक सांसद ने संसद में प्रश्न किया कि भारत में सरकार के बाद सबसे अधिक जमीन किसके पास है तो उत्तर दिया गया कि भारत में सरकार के बाद चर्च और उनके कान्वेंट स्कूलों के पास सबसे ज्यादा जमीन है | रेलवे से भी ज्यादा जमीन उनके पास है | हजारों हेक्टेयर जमीन इन्हें एक रुपये के निजी पट्टे पर दी गई है | साल भर में हजारों हेक्टेयर जमीन इस्तेमाल करके ये चर्च और कान्वेंट केवल एक रुपये देते हैं | सन् १८२० से अंग्रेजों की

सरकार ने इस तरह इन्हें जमीन देना शुरू किया और २००६ तक यह अबाध गति से चालू रहा | हमारी ही जमीन है, हमारा ही पानी है, हमारे ही संसाधन हैं | पहले ऐसा अनुमान था कि सरकार इन चर्चों और कान्वेंट को दान देती होगी लेकिन बाद में पता चला कि सरकार का तो इनको केवल १०% दान दिया जाता है, बाकी दान समाज के द्वारा दिया जाता है | अकेले मुंबई में जितने कान्वेंट हैं उनमें ९२% हिन्दू लड़के-लड़कियाँ पढ़ते हैं | २.५% ईसाई समाज के बच्चे पढ़ते हैं और शेष प्रतिशत में मुसलमान पढ़ते हैं, ये है स्थिति | ९२% जो हिन्दू-समाज के विद्यार्थी मुंबई के कान्वेंट स्कूलों में पढ़ते हैं, उनके माँ-बाप एक साल की फीस के रूप में १८ हजार करोड़ रुपये देते हैं | क्या आप सोचते हैं कि यह रकम कितनी बड़ी है ? राजस्थान सरकार के बजट का लगभग आधा केवल मुंबई के कान्वेंट स्कूलों में फीस के रूप में दिया जाता है | फिर कलकत्ता के कान्वेंट, चेन्नई (मद्रास) के कान्वेंट, दिल्ली के कान्वेंट, हैदराबाद के कान्वेंट, इनके बाद बी-वर्ग के शहरों के कान्वेंट जैसे अजमेर-जयपुर शहर के तथा सी-वर्ग के शहर | कुल कान्वेंट स्कूलों में भारतीय समाज द्वारा एक वर्ष में एक लाख करोड़ रुपये से अधिक का दान और फीस भी दी जा रही है | ये लोग पैसा लेते हैं और हमारे ही बच्चों का दिमाग घुमा रहे हैं | एक कान्वेंट स्कूल के खिलाफ 'आजादी बचाओ आन्दोलन' के प्रवर्तक श्रीराजीव दीक्षित ने गुजरात हाई कोर्ट में मुकदमा दायर करवाया था | मामला क्या था, गुजरात के किसी कान्वेंट में छोटे-छोटे बच्चे पढ़ने आते थे, उन बच्चों को लेने के लिए बस आती थी, बस के ड्राइवर को कान्वेंट के प्रबंधको द्वारा आदेश दिया जाता था कि बस चलते समय अचानक बंद कर दो | इस तरह बीच में ही 'बस का ड्राइवर' बस को रोक देता और बच्चों से कहता था कि देखो, बस (गाड़ी) खराब हो गई, अपने भगवान् का तुम लोग नाम लो तो हिन्दुओं के बच्चे अपने देवी-देवताओं से प्रार्थना करने लगते तो ड्राइवर 'बस' को चालू नहीं करता था और बच्चों से कहता था कि अब तुम लोग ईसामसीह का नाम लो | बच्चे ईसामसीह का नाम लेने लग जाते तो ड्राइवर 'बस' को स्टार्ट कर देता, तब ५-६ साल के बच्चों के दिमाग में ये बात बैठ जाती थी कि ईसामसीह तो बहुत ताकतवर हैं, फिर वे बच्चे घर आकर अपने माँ-बाप से कहते कि हमारी बस खराब हो गई थी, हमने ईसामसीह का नाम लिया तो बस चालू हो गई | एक बच्चे ने अपने घर में यह घटना 'राजीव दीक्षित' को सुनाई थी तो उनकी आत्मा हिल गई, उन्होंने विचार किया कि ये हो क्या रहा है ? रामसनेही सम्प्रदाय के एक संत ने तो बताया कि इतना ही नहीं होता, कान्वेंट स्कूलों में इससे भी आगे विकृतियाँ होती हैं – जो छोटे बच्चे होते हैं, जिनके मन भोले-भाले होते हैं, उनको खेल खिलाया जाता है | हिन्दुओं के बच्चों के लिए देवी-देवताओं की मूर्तियाँ धातु की बनाई जाती हैं और बच्चों से कहा जाता है कि इन्हें 'स्विमिंग पूल' में तैराओ, बच्चे उन्हें डाल देते हैं तो मूर्तियाँ डूब जाती हैं क्योंकि वे धातु की बनी हुई होती हैं | तब ईसाई शिक्षक कहता है कि तुम्हारे भगवान् डूब गए, फिर उन्हीं बच्चों को लकड़ी की ईसामसीह की मूर्ति दी जाती है और कहा जाता कि इन्हें पानी में तैराओ तो वह मूर्ति तैरने लगती है, तब महाधूर्त ईसाई-शिक्षक कहता है कि देखो, ईसामसीह तैर सकते हैं, तुम्हारे राम-कृष्ण तो कमजोर हैं, वे डूब गए | स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक देशभक्त आन्दोलनकारी ने इन कान्वेंट स्कूलों के संचालकों के बारे में देशवासियों से कहा था कि दुश्मन हमसे ताकतवर है, उसका बहिष्कार करो और असहयोग करो, बाद में गाँधीजी ने इसको और तेजी से कहा कि हम इन देशद्रोही कान्वेंट स्कूलों और इनकी दूषित शिक्षा को भारत से हटाना चाहते हैं, इनके साथ असहयोग करो और इनका बहिष्कार करो | कथनाशय है कि ९२% हिन्दू विद्यार्थी जो कान्वेंट स्कूलों में अध्ययन हेतु जाते हैं, उनको रोकिये और इसे हमको अपने ही घर से शुरू करना चाहिए कि हम अपने घर के किसी भी बच्चे को कान्वेंट में नहीं पढ़ाएँगे | हम उसे (बास्टर्ड) दो बापों का बेटा नहीं बनायेंगे,

वह इंजीनियर बने, न बने; डॉक्टर बने चाहे न बने, कम से कम बास्टर्ड तो न बनें; इतना अधिक अपमान तो न करें हम अपने पिता का | हम अपने बच्चों को कान्वेंट स्कूलों में न भेजें तो कहाँ भेजें ? हिन्दुओं के स्कूलों में भेजेंगे | आप कहेंगे कि उनमें सुख-सुविधा कम है लेकिन जब धन का प्रवाह कान्वेंट स्कूल से भारतीय स्कूलों की ओर बढ़ जायेगा तो सुविधाएँ भी बढ़ जाएँगी | आप विचार करो कि १८ हजार करोड़ रुपया बम्बई के कान्वेंट स्कूल को प्रतिवर्ष मिलता है, इतना ही पैसा यदि सनातन धर्म के लोगों को मिल जाए या जो भी भारतीय संस्कृति पर आधारित स्कूलों को चलाते हैं, उनको यह धनराशि मिल जाए तो उनमें भी सुविधाएँ बढ़ जाएँगी | धन के प्रवाह की दिशा को बदलने की जरूरत है | अभी धन का प्रवाह कान्वेंट स्कूल की तरफ है, इसलिए सुविधायें वहाँ अधिक हैं | 'भारतीयों के स्कूल' जल के प्यासे हैं, बैठने के लिए उनमें धरती पर टाट-पट्टी नहीं है, स्कूल में पढ़ाने को ब्लैक-बोर्ड नहीं हैं | सामान्य जरूरत की चीजें जैसे - शौचालय आदि भी वहाँ नहीं हैं, ऐसा इसलिए है कि वहाँ धन का अभाव है | इसीलिए धन का प्रवाह कान्वेंट स्कूलों से इन भारतीय-संस्कृति पर आधारित विद्यालयों (जैसे – सरस्वती शिशु मन्दिर, सरस्वती विद्या मन्दिर...आदि) की ओर मोड़ दो | इसके लिए समाज में एक विशेष जागृति की लहर आनी चाहिए कि आखिर हमारे देश में ये कान्वेंट स्कूल क्यों हैं और कब तक बने रहेंगे ? क्योंकि इनकी अनैतिक-शिक्षा से भारतीय-संस्कृति (जहाँ स्वयं श्रीभगवान् अवतार लेकर लीलाएँ करते हैं, ऐसी विशुद्ध भक्तिमय परमपावन सनातन हिन्दू संस्कृति) पर कुठाराघात हो रहा है, जिससे भारतवर्ष (हिन्दुस्तान) की बहुत बड़ी आध्यात्मिक-हानि है, इसे हम सब भारतीयजन अच्छी तरह से समझें, जिससे नई चेतना उत्पन्न हो और शीघ्रातिशीघ्र किसी अभियान का स्वरूप लेकर इस 'कान्वेंट स्कूल' रूपी अतितीक्ष्णविषयुक्त वृक्ष को भारत से समूलतः उखाड़ फेकें |

काल से मुक्त होने का रास्ता

आया है सो जाएगा राजा रंक फकीर । एक सिंहासन चढ़ चला दूजे बंधा जंजीर ॥

एक सिंहासन पर जाएगा यानी मरने के बाद उसको अविनाशी पद मिल जाएगा और एक जंजीर में बाँधा जाएगा। इसीलिए भगवद्भक्त को मनुष्य नहीं समझो। जीव जब भगवान् का चिन्तन करता है, तब काल शक्ति से छूट जाता है, उसकी उम्र तक बढ़ जाती है। भागवत में लिखा है –

आयुषोऽपचयं जन्तोस्तथैवोपचयं विभुः ।
उभाभ्यां रहितः स्वस्थो दुःस्थस्य विदधात्यसौ ॥ (भा. ४/११/२१)

जैसे ही मनुष्य भजन करता है वैसे ही उसकी आयु बढ़ती है। अकाल मृत्यु टल जाती है। लगभग १०० वर्ष की उम्र हर व्यक्ति को मिली है, लेकिन मनुष्य जो पाप या अपराध करता है चाहे वे इस जन्म के हों या पिछले जन्म के, वे उसको पहले ही मार डालते हैं। केवल भगवान् की भक्ति वाला अकाल मृत्यु से बच जाता है। भक्ति करो, अकाल मृत्यु से बचोगे, व्याधियों से बचोगे। श्रीमद्भागवत में यह बात कही गयी है –

शारीरा मानसा दिव्या वैयासे ये च मानुषाः ।
भौतिकाश्च कथं क्लेशा बाधन्ते हरिसंश्रयम् ॥ (भा. ३/२२/३७)

यह संसार माया है, इसको देखकर जो इसे सत्य मानता है, वह पशु है। माँ-बाप सब पशु हैं, बच्चा बड़ा हुआ तो सोचते हैं इसका विवाह हो, यह भोग भोगे, इसको रोटी-पानी मिल जाए, बस इससे आगे कुछ नहीं सोचते। कोई माँ-बाप नहीं सोचता कि हमारा बच्चा संसार रूपी कारागार से मुक्त हो जाए।

सरल-सरस साधन 'श्रीभगवन्नाम'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'नाम-महिमा' (२६/०५/२०१०) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी गोपिकाजी, मानमन्दिर, बरसाना

(श्रीबाबामहाराज के शब्दों में) –

'काई विषय मुकुर मन लागी |' ये काई छूटती नहीं है | इस काई को छुड़ाने का एक ही उपाय है निष्किंचन होकर विशुद्ध भक्त व भगवान् में निष्कपट शरणागति हो जाए, बस उसी समय बेड़ा पार हो जाएगा, उसके पहले भगवान् के नाम-रूप-लीला-धाम आदि के मधुरता का अनुभव नहीं होगा | किसी तरह से कीर्तन में बैठ भी जायेंगे तो सोने लगेंगे | मन कैसे लगेगा ? हृदय में अन्धकार है, जब विशुद्ध महापुरुषों का संग मिल जाता है तब जबरदस्ती साधन करना पड़ता है, सच्चे संग से अपने आप धीर-धीरे मन भगवान् में लग जाता है लेकिन एक दिन में नहीं होगा, निरंतर कहीं ऐसा शुद्ध संग मिल जाए लेकिन संसार में जल्दी निरंतर संग मिलता नहीं है | भगवान् की कृपा से ही विशुद्ध सत्संग मिलता है | **"सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू |"** इसलिये सबसे ज्यादा सुखद और सुलभ भगवन्नाम है | काशी और प्रयाग में जाकर शरीर छोड़ो, इतना कठिन तप करो, लेकिन भगवन्नाम से सब कुछ सहज में मिल जाता है | **'काशी विधि बस तनु तजै |'** काशी में सारे जीवन विधि-विधान से रहकर के शरीर छोड़ो | हटि तन तजै प्रयाग, प्रयाग में कोई जबरदस्ती जाकर शरीर छोड़े | **"तुलसी जो फल सो सुलभ, राम नाम अनुराग ||"** इतना बड़ा तप क्यों किया, वह फल तो सहज भगवान् के नाम से सुलभ हो जाता है | संत ज्ञानदेवजी के पिताजी थे, जो अपने गुरु श्रीरामानंदजी से झूठ बोले कि मेरा विवाह नहीं हुआ है, साधु बन गए | बाद में पता पड़ा उनका विवाह हुआ है उनकी पत्नी रुक्मणिबाईजी थीं | एकबार श्रीरामानंदजी सब शिष्यों के साथ दक्षिण में दर्शन करने जा रहे थे, तो उनकी पत्नी ने घूँघट में आकर स्वामीजी को प्रणाम किया तो गुरु रामानन्दजी ने आशीर्वाद दिया - 'पुत्रवती भव' | तब वह बोल उठी कि महाराज ! मैं पुत्रवती कैसे हो सकती हूँ ? आपकी वाणी झूठी हो जाएगी, क्योंकि हमारे पतिदेव तो आपके साथ हैं, साधु बन गए हैं | तो गुरुजी बोले कि अरे ! तुम हमसे झूठ बोले हो, अब जाओ फिर से गृहस्थ में जाओ | अब कोई साधु बनके फिर से गृहस्थ में आता है तो ये शास्त्र-विरुद्ध माना गया है | उनसे जब ज्ञानदेवजी पैदा हुये तो उनको जाति से निकाल दिया गया | सबने कहा संयोगी का लड़का है तो इनके पिताजी ने कहा हमारा बच्चा भी वेद पढ़े, ब्राह्मण बना लो | सबने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता है, तुम संयोगी हो, तुमने साधु बनकर के बच्चा पैदा किया | ज्ञानदेवजी के पिताजी बोले कि इसका कोई प्रायश्चित नहीं है | सब ब्राह्मण बोले – "तुम दोनों स्त्री-पुरुष प्रयाग में जाकर शरीर छोड़ दो, यही प्रायश्चित है | तो दोनों लोग प्रयाग में गये और पत्थर बाँध के डूब मरे | इसके बाद जब ज्ञानदेवजी पढ़ने गये कि हमारे माँ-बाप ने प्रायश्चित कर लिया है, अब वेद पढ़ाइए | तब वे ब्राह्मण बोले कि तेरा बाप मर गया है, अब हम वेद नहीं पढ़ाएँगे | कितनी क्रूरता किए वे वेदों को पढ़ाने वाले ब्राह्मण | भक्ति के बिना हृदय शुद्ध नहीं होता, चाहे कितना भी पढ़ लो | ज्ञानदेवजी तीन भाई और एक बहन थी - ज्ञानदेवजी, सोपानदेवजी, निवृत्तिनाथजी और मुक्ताबाई जी | संसार जब ठुकरा देता है तब भगवान् की दया होती है अनाथ पर | भगवान् का नाम है – अनाथों का नाथ | भिक्षा भी कोई नहीं देता सब (बहिन सहित तीनों भाई) भूखे मरने लग गए | महाराष्ट्र में दीवाली के समय पर चीला बनता है, वे लोग आटा माँगे कि चीला बनाकर के खाएँगे, नदी के किनारे जाकर के बनाने लग गए, तो वहाँ कट्टर ब्राह्मण लोग आकर कहने लगे कि ऐ ! तुम लोगों का मुँह देखना पाप है, चीला खाने चले आए, तवा उठाकर नदी में फ़ेंक दिया, अब चारों अनाथ बच्चे भूखे रह गए | उसी समय भगवान् की कृपा का अवतार होता है उनके अंत:करण में | दैन्य से ही भगवान् आते हैं | निम्बार्काचार्यजी ने लिखा है –

"कृपास्यदैन्यादियुजप्रजायते यया भवेत् प्रेमविशेषलक्षणा |"

दैन्यभाव आने पर ही कृपा होती है, जिससे प्रेममयी भक्ति प्राप्त होती है | हम जैसे लोग 'अहम्' से अंधे हैं तो कृपा कैसे हो जाएगी | उसी समय ज्ञानदेवजी के अन्दर ईश्वरी-शक्ति आई, उठकर बैठ गए और बोले कि मुक्ता ऽ ऽ ऽ ऽ ! ! !, वह रो रही थी बेचारी | मुक्ताबाई बोली – 'हाँ भइया !' 'आ ऽ ऽ ऽ, मेरे पीठ पर सेंक ले | न आग थी, न चिमटा-तवा था | लेकिन भगवान् की कृपा से उसने जैसे ही पीठ पर रखा, बढ़िया-बढ़िया चीला बनकर तैयार होने लगे, क्योंकि ईश्वरीय-शक्ति आ गई थी | जब भगवान् की कृपा हो गई, तो सिद्ध हो गए | साधन वगैरह की क्या जरूरत है ? 'अहं' गल गया, दैन्य आ गया तो सिद्ध हो जाता है जीव | फिर ज्ञानदेवजी ब्राह्मणों के पास गये, जिन्होंने ठुकरा दिया था, उनसे कहा कि आप मुझे वेद नहीं पढ़ाएँगे, तो उन लोगों ने कहा – 'नहीं ....ऽऽऽ |" ज्ञानदेवजी बोले कि हमारे पिताजी ने तो प्रायश्चित कर लिया, उन लोगों ने प्रयाग में जाकर शरीर छोड़ दिया | तो ब्राह्मणों ने कहा कि मर जाने दो ऐसे माँ- बाप को, वे पापी थे | तब ज्ञानदेवजी बोले कि तुम लोग वेद पढ़कर भी ऐसा कह रहे हो, तुमसे तो पशु अच्छा है | तो वे ब्राह्मण चिढ़ गए, मारने को दौड़े | ज्ञानदेवजी बोले – "वेद पढ़ना बड़ी बात नहीं, वेद तो एक भैंसा भी पढ़ लेगा |" तो पंडितों ने कहा, "अच्छा, भैंसे से वेद पढ़वाओ |" तो ज्ञानदेवजी भैंसे के ऊपर हाथ रखकर बोले कि भैंसे ! वेद पढ़ | उसी समय भैंसा वेद पढ़ने लग गया | सारा समाज आश्चर्य में पड़ गया | इसलिए गोसाईंजी लिखते हैं कि क्या जरूरत है कि तुम प्रयाग में जाकर के प्रायश्चित करने के लिये शरीर छोड़ो, क्या जरूरत है काशी में जाकर के मरो, मर भी जाओगे तो फल नहीं मिलेगा |

काशी विधि बस तनु तजै, हटि तन तजै प्रयाग |
तुलसी जो फल सो सुलभ, राम नाम अनुराग ||

(दोहावली)

भगवन्नाम इतना सुलभ साधन है | चैतन्य महाप्रभुजी के समय एक भक्त राजा थे – सुबुद्धिराय, उनका एक मुसलमान नौकर था जिसने कुछ बदमाशी किया था, उसको मृत्युदंड देना चाहिए था लेकिन कुछ चाबुक मारकर छोड़ दिया था | कालान्तर में वह छल करके बादशाह बन गया | अब वह एक दिन नहा रहा था तो उसकी जो बेगम थी, उसने उसकी पीठ पर चाबुक का निशान देखा तो पूछी ये निशान कैसा है ? तो उसने बताया हम कभी सुबुद्धिराय के नौकर थे तो हमसे अपराध हुआ, हमें प्राणदंड मिलना था लेकिन उन्होंने दया करके चाबुक मारकर छोड़ दिया | सुनकर वह बड़ी गुस्सा हुई और बोली कि मैं तो तभी पानी पियूँगी जब इसको मारोगे | तो वह बोला कि हम कैसे मार सकते हैं, उसने तो दया किया था हमारे ऊपर | लेकिन स्त्री ने हठ कर लिया, बोली कि अच्छा, इसका धर्म भ्रष्ट कर दो | पहले बहुत जातिवाद था, यदि किसी मुसलमान का छुआ खा लिया तो उसको जाति से निकाल देते थे | संकीर्णता, साम्प्रदायिकता से सारा हिन्दुस्तान बर्बाद हो गया | हमारे देश का नाश ही इसी कारण हुआ कि हम लोगों में फूट (भेदबुद्धि) बहुत है, एकता नहीं है | जब सुबुद्धिरायजी को मुसलमानों ने सुराही से पानी पिला करके उनका धर्म-भ्रष्ट कर दिया, तो वे पंडितो के पास गये | ब्राह्मणों ने कहा कि अब तो तुम्हारा धर्म भ्रष्ट हो गया, अब तुम शरीर छोड़ दो, यही एक उपाय है | उसी समय भगवान् की कृपा से उन्हें महाप्रभुजी मिल गए तो उन्होंने बताया कि हम शरीर छोड़ने जा रहे हैं, तो महाप्रभुजी ने कहा कि शरीर छोड़ने से क्या होता है, भूत-प्रेत बनोगे और कुछ नहीं, इसलिए श्रीकृष्ण-नाम लो (संकीर्तन करो) | शरीर छोड़ने से क्या होगा ? (क्रमशः)

चिन्तन अनन्य अर्थात् अपराध शून्य होना चाहिए। कोई त्रुटि हो जायेगी, कोई पाप बन जायेगा तो उसे भगवान् का स्मरण अपने-आप नष्ट कर देगा

श्रीयुगलरस-प्रदायिका 'ब्रज-वसुन्धरा'

श्रीबाबामहाराज के पदगान (२२/११/२०१९) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी हरिगीता जी, मानमन्दिर, बरसाना

(श्रीबाबामहाराज के शब्दों में) –

"दधि के दान मिस ब्रज की बीथिन माँहि, झकझोरनि अंग-अंग को परसिबो।" श्यामसुन्दर जब दही का दान लेते हैं तो गोपियाँ ऐसे ही नहीं देती हैं, श्यामसुंदर आयेंगे और कहेंगे दान नहीं दे रही है, दान दे। झकझोर करके माँगते हैं, ब्रजगोपी या ग्वालबाल के सभी अंगों को छूते हैं। श्रीकृष्ण का नाम है 'वाञ्छाकल्पतरु'। राधारानी परम कृपा करती हैं। ऐसा दृढ़ विश्वास हो जाए – **'छीतस्वामी गिरधारी विट्ठलेश वपुधारी'** बड़े-बड़े आचार्य भगवान् के रूप हैं, इसलिए ऐसा गाया गया है। **'शरद रेनु रस-रास को बिलसिवौ'** वह शरद की रात्रि, पूर्णिमा की रात, जिसमें तुम रास करोगे, जब हमें ब्रज मिल जाएगा, सच्चा भाव मिल जाएगा तो अपने आप रास मिलेगा, रसराशि का विलास मिलेगा, इसलिए हमें कुछ और नहीं चाहिए; यही भाव जब पक्का होगा, सच्ची पुकार हृदय से निकलेगी तो यहीं इसी ब्रज में निवास मिलेगा, बाहर नहीं, इसी मिट्टी में जन्म होगा और यहाँ प्रभु मिलेंगे, यहाँ लीला मिलेगी, दर्शन मिलेगा। हम लोगों में निष्ठा नहीं है। 'याही ब्रज' – इसी ब्रज में, इसी मिट्टी में हमें सब कुछ मिलेगा। अभी तो हम लोग दौड़ते हैं, इधर जाते हैं, उधर जाते हैं, यहाँ पैसा मिलेगा, वहाँ भोग मिलेगा। जब ब्रज-भाव आ जायेगा तो फिर गायेंगे – **"कहा करों वैकुण्ठहि जाय।"** गोविन्द स्वामी ने यह पद गाया जब ब्रजवासियों को भगवान् 'वैकुंठ' ले गये थे और वहाँ ब्रजवासी दुःखी हुए, रोने लग गये और बोले – अरे, हम कहाँ आ गये, हमारा तो वही ब्रज था, 'वही ब्रज है' उसे क्यों छुड़ाते हो ? अभी तो कुछ पैसा मिल जाए, खाना-पीना, भोग मिल जाए तो इसके लिए हम लोग ब्रज को छोड़कर भागते हैं। बड़े-बड़े महात्माओं ने ब्रजवास के लिए राज-पाठ छोड़ दिया, चक्रवर्ती सम्राटों ने सब कुछ छोड़ दिया किन्तु इस मिट्टी (ब्रजरज) को नहीं छोड़ा तो वह उनको मिली। **'जहाँ नहीं वंशीवट यमुना, गिरि गोवर्धन नन्द की गाय।'** श्रद्धा-भक्ति नहीं है, विश्वास नहीं है। **'जहाँ नहीं यह कुञ्ज लता द्रुम।'** ये पद ग्वालबालों ने गाया, जिनको भगवान् वैकुंठ ले गये थे और वहाँ वे रोने लग गये कि अरे, वह हमारा ब्रज कहाँ है, जहाँ वंशीवट है, यमुनाजी है। अभी हम लोग ब्रज की महिमा नहीं समझते हैं। यदि कोई कहता है कि महाराज ! गाड़ी आ गयी है, दिल्ली चलो तो हम चले जायेंगे, छोड़ देंगे ब्रज को। ये सब पद गाते हैं किन्तु हमारी क्रिया में नहीं है। **'मन्द सुगंध बहत नहीं वाय।'** जिस वैकुंठ में मन्द-सुगन्ध वायु नहीं बहती है, ऐसे वैकुंठ में जाकर हम क्या करेंगे ? **'कोकिल हंस मोर नहीं कूँजत, ताको बसिबो काहि सुहाय।'** हम यहाँ गह्वरवन में रहते हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ सैकड़ों मोर एक साथ बोलते हैं लेकिन ऐसा विश्वास नहीं होता है कि ये उसी समय के मोर हैं। **'जहाँ नहीं वंशी धुन बाजत।'** निष्ठा नहीं है। वंशी नहीं सुनायी पड़ती है जबकि दिन-रात यहाँ वंशी बजती है। कृष्ण न पुरवत अधर लगाय। जब हम वंशी बजायेंगे तो उसमें हमारी थूक जायेगी, हमारे मुँह की हवा जाएगी इसलिए उसमें वह रस नहीं आयेगा किन्तु जब श्यामसुन्दर वंशी बजायेंगे तो जब उनके होठों से वंशी बजेगी तो कृष्ण अमृत मिलेगा। वैकुंठ में जाकर भी सब ग्वालबाल, सब ब्रजवासी रो रहे हैं – **'प्रेम पुलक रोमांच न उपजत, मन वच क्रम आवत नहिं धाय।'** रोंगटे खड़े नहीं होते। वैकुंठ तो बहुत ऊँची चीज है। अभी कोई हमारे सामने गाड़ी लाकर कहे कि महाराज ! कलकत्ता चलो, बम्बई चलो तो हम तुरंत चले जायेंगे। उस समय ये पद याद नहीं रहेगा कि हम गाते तो हैं कि वैकुंठ भी नहीं जाना चाहिए और अब जा रहे हैं दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई क्योंकि हमारे में निष्ठा नहीं है, भावना नहीं है। **'जहाँ नहीं यह भुवि वृन्दावन, बाबा नन्द यशोमति माय।'** यह धाम पृथ्वी पर ही है, अलग नहीं है, यहीं दिखाई पड़ेगा, यहीं सुनाई पड़ेगी वंशी। ये सब यहीं दिखाई पड़ेंगे लेकिन हमारे में भाव नहीं है, निष्ठा नहीं है, प्रेम नहीं है इसीलिए कोई

बुलाता है और कहता है कि इतनी दक्षिणा देंगे, इतना पैसा देंगे तो हम तुरंत चले जायेंगे | **'गोविन्द प्रभु तजि नन्द सुवन को, ब्रज तजि वहाँ मेरी बसै बलाय |'** बलाय अर्थात् जो बाधायें हैं दुर्भाग्य की, वह जाकर वहाँ रहे, हमको तो कभी ब्रज के बाहर जाना न पड़े | इसको कहते हैं ब्रज में रहना, ब्रज का भाव, ब्रज की निष्ठा | इस निष्ठा के साथ यहाँ आओ, इस निष्ठा के साथ यहाँ रहो तो अवश्य श्रीराधाश्यामसुंदर मिलेंगे | गोविन्द स्वामी को ब्रज-प्रेम मिला, इन महात्माओं को सब दर्शन हुए, सच्चे ब्रज का दर्शन मिला और हम लोगों को कुछ नहीं मिला है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि यहाँ आना छोड़ दो | अवश्य आओ, मन में निष्ठा लेके आओ, मन को पक्का करके आओ | यह वही ब्रज है जो बहुत शीघ्र ही श्रीकृष्ण-प्रेम दे देगा | ब्रजभूमि में निष्ठापूर्वक निवास करते हुए युगल सरकार के नाम-रूप-लीला आदि का गुणगान करो | अनन्य बन जाओ, 'टेक' माने निष्ठा | इन महात्माओं ने जो गाया, वह उनको यहाँ मिला है | इस मिट्टी में रहते हुए यहाँ का प्राकृत भाव चला जाए, उसको अनिवास कहते हैं | इस तरह तुम यहाँ रहोगे सांसारिक मिट्टी का भाव छोड़ करके, इसी विश्वास आनंद में | देखो, ऐसा आनन्द मिल सकता है, यदि ऐसा अखंड विश्वास हो जाए, एकरस भाव बन जाए तो इसलिए – **कहा करै वैकुंठहिं जाय |** वैकुंठ में जाने की इच्छा नहीं आनी चाहिए, वैकुंठ पाने की इच्छाएं ख़तम हो जाएँ तो समझो ब्रजरस आ गया | अरे, तुम लोग ब्रज में रह रहे हो, ब्रजवासी बन गये हो फिर क्यों बाहर जाते हो, क्या हुआ यदि बाहर जाने से कुछ पैसे मिल जायेंगे, क्या है कुछ अच्छा भोजन मिल जायेगा | ये सब चीजें ब्रज को छुड़ा देती हैं | हम लोगों को राधारानी ने वह रज दे दी है लेकिन वह निष्ठा और भावना मिल जाये क्योंकि निष्ठा व भावना से ही वह ब्रजरस मिलता है | श्रीमद्भागवत माहात्म्य में लिखा है कि यह वृन्दावन धन्य है, जहाँ भक्ति आज भी नाचती है | सनकादिक मुनियों से भक्ति बोली कि वृन्दावन की इसी मिट्टी को पाकर मैं नवीन (नयी) जवान बन गयी हूँ, मेरा सुन्दर रूप बन गया है –

वृन्दावनं पुनः प्राप्य नवीनेव सुरूपणी |
जाताहं युवती सम्यक्प्रेष्ठ रूपा तु साम्प्रतम् ||

(श्रीमद्भागवत, माहात्म्य १/५०)

भक्ति का रूप बदल गया | इस मिट्टी का रूप भी बदल जाता है, सुन्दर दिव्य बन जाता है अगर ब्रज-वृन्दावन में ऐसा भाव आ जाए हमारा | इस भाव के लिए ही हम लोग यहाँ पड़े हैं | ये भाव जब श्रीजी देंगी तब आएगा | अब हम भी ब्रजयात्रा करेंगे और ऐसा प्रयत्न कर रहे हैं कि हमारे साथ ऐसे लोग चलें, जिनका यही भाव रहे -**'वृन्दावनस्य संयोगात्पुनस्त्वं तरूणी नवा |'** श्रीब्रज-वृन्दावन के संयोग से भक्ति 'नवयुवती' बन गयी –

वृन्दावनस्य संयोगात्पुनस्त्वं तरूणी नवा ।
धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च ॥

(श्रीमद्भागवत, माहात्म्य १/६१)

आज भी यहाँ भक्ति नाचती है | यहाँ रसमण्डप में भी भक्ति नाच रही है | आज भी ये वही ब्रज है | ऐसी निष्ठा बन जाए तो निश्चय ही भगवान् मिलेंगे | भक्ति का बुढापा चला गया और वह नवीन (जवान) बन गयी | ये स्वयं भक्ति के वाक्य हैं | जो भक्ति कलियुग के प्रभाव से बूढ़ी हो गई थी, वह जवान हो गई निष्ठा के कारण, भावना के कारण | श्रीजी ने कृपा किया, ४-५ बार मेरे ऊपर मौत आई और बचने की कोई आशा नहीं थी, फिर भी मेरा शरीर बच गया, इसलिए मेरे मन में पक्का विचार है कि अब हम भी ब्रजयात्रा में चलेंगे | साथ चलने वालों को इसीलिए अभी से हम कह रहे हैं कि अपना मन पक्का कर लो, ऐसा पक्का कर लो कि शरीर बदल जाए, मन बदल जाए, आँखे बदल जाएँ, सब कुछ बदल जाए लेकिन ब्रज-निष्ठा (ब्रज-प्रेम) न बदले | जैसा कि अभी हमने भागवत का श्लोक सुनाया, भक्ति जो बूढ़ी थी, वह जवान हो गई, उसका दिव्य रूप बन गया |

दीन बंधु का द्वार खुला है, आना हो सो आवै ।
अभय दान का दान बँट रहा, लेना हो ले जावै ॥

रसमयी भक्ति 'नृत्य-गान'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गोपी-गीत' (२७/८/१९९४) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बाल व्यासाचार्या- साध्वी दयाजी, मानमन्दिर, बरसाना

(श्रीबाबामहाराज के शब्दों में) –

सत्यं दिशत्यर्थितमर्थितो नृणांनैवार्थदो यत्पुनरर्थिता यतः | स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानंनिजपादपल्लवम् ||

(श्रीमद्भागवतजी ५/१९/२७)

ये बात सही है कि श्रीभगवान् मनचाही वस्तु (मान-प्रतिष्ठा आदि) दे देते हैं लेकिन ये भगवान् का वास्तविक देना (सच्ची कृपा) नहीं है | भजन करने वाले के मन में फिर कभी इच्छा न आवे, इसके लिए उसके हृदय में श्रीभगवान् अपना चरणकमल रख देते हैं; ये भगवान् का सबसे बड़ा देना (वास्तविक कृपा) है | सच्चे भक्त कुछ लेना तो दूर है यदि भगवान् भी कुछ देना चाहें तो उन्हें भी फटकार देते हैं | हम लोग जिसको कृपा समझते हैं, भगवान् के सच्चे भक्त उसे जहर समझते हैं | उदाहरण के तौर पर नृसिंह भगवान् ने प्रह्लादजी से कहा कि मुझसे कुछ वरदान माँग लो, उन्होंने प्रह्लाद को वरदान के बहुत से लोभ दिए कि एक मन्वन्तर तक राज्य ले लो, पूरे ब्रह्माण्ड के स्वामी बन जाओ अथवा कुछ भी माँग लो किन्तु प्रह्लादजी बोले – महाराज ! आपने परीक्षा के लिए यह बात कही है, आप तो करुणामय भगवान् हैं, क्या आप अपने भक्त को ये सब विष देंगे? संसार के समस्त विषय-भोग, खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता आदि के लिए ही तो दुनिया मर रही है | संसार का हर जीव अच्छा भोजन चाहता है, कुत्ते-बिल्ली भी अच्छा भोजन चाहते हैं, वे भी अच्छा बिस्तर गद्दा-तकिया आदि चाहते हैं, इन वस्तुओं की प्राप्ति को जो भगवान् की बड़ी कृपा मानता है, वह अत्यधिक मूढ़ है | प्रह्लादजी कहते हैं कि करुणाशाली भगवान् अपने भक्त को ये चीजें दें, यह बात समझ में नहीं आती है और जो सेवक इन मायिक पदार्थों की, धन,स्त्री-पुत्र व भोग आदि की आशा करता है तथा इनकी प्राप्ति को प्रभु की कृपा समझता है, वह बनिया है, भगवान् का दास नहीं है | अब इन बातों के आधार पर यह पता लगाना चाहिए कि हम दास हैं कि नहीं हैं |

आशासानो न वै भृत्यः स्वामिन्याशिष आत्मनः । न स्वामी भृत्यतः स्वाम्यमिच्छन् यो राति चाशिषः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/५)

जो सच्चा दास है वह कामना पूर्ति के बारे में नहीं सोचता और जो दास की कामनापूर्ति करता है, वह स्वामी सच्चा स्वामी नहीं है | यहाँ प्रह्लादजी ने भगवान् को भी फटकार दिया और कहा कि ऐसा स्वामी, ऐसा भगवान् किस काम का जो अपने भक्त को भोग दे दे और कहे कि तू इन्हें भोग ले और मुझे भूल जा | कैसा विचित्र होता है भक्तों का सिद्धांत, कितने कट्टर वे होते हैं, कितने खरे, कितने सच्चे होते हैं, इसको कहते हैं भक्त | प्रह्लादजी नृसिंह भगवान् से बोले – **"अहं त्वकामस्त्वद्भक्तस्त्वं च स्वाम्यनपाश्रयः |"**

(श्रीमद्भागवतजी ७/१०/६)

मैं तुम्हारा कामनारहित दास हूँ | अतः यदि आप मुझे कोई चीज देना ही चाहते हैं तो यह दीजिये कि मेरे हृदय में कभी कोई कामना उत्पन्न ही न हो | केवल यही वरदान मुझे दे दीजिये, इसको कहते हैं भक्त | एक बात समझो, वासना दो प्रकार की होती है – (१) स्थूल वासना, (२) सूक्ष्म वासना | अपनी पोलपट्टी समझने के लिए इसे बहुत ध्यान से जानने की आवश्यकता है | स्थूल वासना तो समझ में आ जाती है, जैसे - हमारे मन में लड्डू खाने की इच्छा उत्पन्न हुई तो हम जान जाते हैं कि हमारा मन लड्डू खाना चाहता है, यह स्थूल वासना है किन्तु सूक्ष्म वासना अंतःकरण के बहुत भीतर दबी रहती है, जिसके बारे में हमें पता ही नहीं पड़ता है और वह किस समय भड़क उठेगी, इसका कोई पता नहीं, जैसे - बहुत नीचे आग की कोई चिनगारी दबी हुई है तथा ऊपर बहुत बड़ा राख का ढेर है किन्तु चिनगारी दबी हुई है, वह किस समय प्रकट हो जाएगी, इसका कोई पता नहीं, इसे सूक्ष्म वासना कहते हैं; यह सूक्ष्म वासना सबके मन में है और यह भगवान् के दर्शन किये बिना नहीं जाएगी |

भगवान् ने स्वयं गीता में कहा –

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः |
रसवर्जं रसो ऽ प्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ||

(श्रीमद्भगवद्गीताजी २/५९)

बहुत दिनों तक भोजन न करने से विषय बाहरी रूप से चले जाते हैं किन्तु जो विषय का रस है, वह उसका बीज है, वह तो परमात्मा के दर्शन के बाद ही जायेगा, उसके पहले सबके हृदय में सूक्ष्म वासना दबी रहती है | हर आदमी के मन में मान-बड़ाई की वासना, अहंता की वासना है | इसका परीक्षण करके स्वयं देख लो, कोई गाली दे तो आपको बुरा लगेगा और यदि प्रशंसा करेगा तो आपको प्रसन्नता होगी | यह क्या है, यह अहंता की वासना है, जो भीतर बैठी हुई है और जिसे हम समझ नहीं सकते | इसीलिए प्रह्लादजी ने नृसिंह भगवान् से कहा कि यदि आप मुझे कुछ देना चाहते हैं तो यही दीजिये कि मेरे मन में कभी भी वासना का उत्थान न हो अर्थात् सूक्ष्म वासनायें जल जाएँ | यह सब सिद्धांत इसीलिए बताया गया क्योंकि पहले जो तानसेन का प्रसंग चला था कि उसके संगीत के पुरस्कार स्वरूप गोस्वामी विट्ठलनाथजी ने उसे सैकड़ों स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान कीं और साथ में एक कानी कौड़ी भी दी, उसका कारण यही था कि तानसेन इतना उत्कृष्ट कोटि का गायक होने के बावजूद भी अपनी कला का प्रयोग एक संसारी राजा अकबर को प्रसन्न करने के लिए करता था क्योंकि उसके भीतर यह सूक्ष्म वासना दबी थी कि मैं इस बादशाह को प्रसन्न करूँ | इसलिए ऐसी कला का कोई मूल्य नहीं है | तानसेन को यह समझ में आ गया कि बात तो सही है कि चाहे कितनी भी बड़ी मेरी कला है किन्तु है तो वह एक राजा के लिए ही | आजकल भी यही स्थिति है | बड़े-बड़े गायकों को अकेले में गाने के लिए बिठा दिया जाये और यदि एक श्रोता है तो वे नहीं गायेंगे, जब वे देखेंगे कि हजारों श्रोता हैं तब स्वतः ही उनके मन में गाने की उमंग उत्पन्न होगी, अकेले में वे किसके लिए गायेंगे, अकेले में तो केवल भगवान् हैं, अकेले में गाने के लिए उनके मन में न जोश उठेगा,न कोई उत्साह रहेगा | अच्छे-अच्छे नृत्यकार जब देखते हैं कि दस हजार लोगों की भीड़ है तब देखो कैसे उनके पाँव थिरकते हैं | एकांत में तो मीराबाई नाचती थीं, जहाँ कोई देखने वाला नहीं होता था, केवल गिरधरलालजी उनका नृत्य देखते थे | तानसेन ने गोसाईंजी से कहा कि मैंने सुना है कि गोविन्द स्वामीजी बहुत अच्छे गायक हैं, मैं उनका गीत सुनना चाहता हूँ | गोसाईंजी ने गोविन्द स्वामी को गाने की आज्ञा दी, वे उठे और तानपुरा लेकर गाना आरम्भ किया | उन्होंने जो कुछ भी गाया, वह अलौकिक था, उसे सुनकर तानसेन मस्तक झुकाकर चले गये और समझ में आ गया कि वास्तव में संगीत तो यह है | उसी प्रकार गोपिकाओं द्वारा गाया गया गोपीगीत यद्यपि उन्होंने रोते हुए गाया था किन्तु उसमें यही सुस्वरता थी कि वह गीत केवल कृष्ण के लिए गाया गया था, उस गीत में अनन्यता एकमात्र कृष्ण के लिए थी | गाना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि भक्ति-शास्त्र और रस-शास्त्र का यह नियम है कि अपना प्यारा यदि रूठ जाए तो गान और नृत्य के द्वारा उसे रिझाना, मनाना चाहिए | अब यहाँ रास के मध्य कृष्ण रूठ गये और कहीं चले गये | रूठ क्यों गये ? गोपियों में मान का भाव देखकर वे रूठ गये | भागवत में शुकदेवजी कहते हैं –

एवं भगवतः कृष्णाल्लब्धमाना महात्मनः |
आत्मानं मेनिरे स्त्रीणां मानिन्योऽभ्यधिकं भुवि ||
तासां तत् सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः |
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ||

(श्रीमद्भागवतजी- १०/२९/४७,४८)

भगवान् ने देखा कि गोपियों को मान हो गया है, अतः वे चले गये | कन्हैयाजी रूठ गये | गोपियाँ जानती हैं कि रूठे हुए को कैसे मनाया जाता है, केवल रोने से कुछ नहीं होता है | इस प्रकार रुदन करो कि वह अपने प्रेमास्पद को रिझाने का एक साधन बन जाये अर्थात् रूठे हुए प्रेमी को मनाना है तो उसके लिए गीत आवश्यक है | किसी रूठे हुए को गाकर, वाद्य यंत्र बजाकर, नृत्य और अभिनय के द्वारा रिझाया जा सकता है और यह सब गोपियों ने किया और किया नहीं अपितु प्रेम ने यह सब करा लिया; यह

भक्तिशास्त्र का मर्म है | हम भगवान् को कैसे प्रसन्न कर सकते हैं ? हम भगवान् को गान करके प्रसन्न कर सकते हैं | यह रस-शास्त्र और भागवत-शास्त्र का नियम है | यह तो सभी लोग जानते हैं कि स्वयं भगवान् ने कहा है –

नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदयेन च |
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ||

न मैं वैकुण्ठ में रहता हूँ और न योगियों के हृदय में, जहाँ मेरे भक्त गाते हैं, मैं वहीं रहता हूँ | भागवत के अनुसार जिस समय ब्रह्माजी के सामने भगवान् प्रकट होते हैं तो ब्रह्माजी कहते हैं –

यस्यावतारगुणकर्मविडम्बनानि
नामानि येऽसुविगमे विवशा गृणन्ति |
ते नैकजन्मशमलं सहसैव हित्वा
संयान्त्यपावृतमृतं तमजं प्रपद्ये ||

(श्रीमद्भागवतजी, ३/९/१५)

श्रीभगवान् के नाम-रूप-लीला आदि के गुणगान से बड़ा कोई अन्य साधन नहीं है | जो हमलोग कृष्ण को गाते हैं, यह साधन देखने में तो लगता है कि कुछ नहीं है, केवल बैठे-बैठे गा रहे हैं | अन्य साधन कठोर हैं जैसे निराहार-निर्जल आदि व्रत करना | अन्य साधनों में तो परिश्रम है किन्तु गान करने में तो बड़ा आनंद है और यह सबसे श्रेष्ठ साधन है, अपने प्रभु को रिझाने का सर्वसुलभ, सर्वश्रेष्ठ और सर्वनिःश्रेयसकर (कल्याणकारी) साधन यही है | कोई कहता है कि हम भगवान् की पूजा करते हैं, उपासना करते हैं | अरे, भगवान् की पूजा तुम क्या कर सकते हो ? कोई कहता है कि हमें बहुत से मन्त्र याद हैं, हम बड़े विधान से पूजा करते हैं किन्तु महापुरुषजन कहते हैं कि इस भीषण कलिकाल में तुम कोई साधन नहीं कर सकते–

एहि कलिकाल न साधन दूजा |
जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ||
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि |
संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ||

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड – १३०)

गोस्वामी तुलसीदासजी ने समस्त साधनों को काट दिया, उन्होंने कहा कि इस कलियुग में न तुम पूजा कर सकते हो और न ही तप, यज्ञ, योग आदि साधन कर सकते हो | यदि कोई साधन करना है तो वह यही है कि भगवान् का यश गाओ | केवल गाओ, इसके अतिरिक्त कलियुग में और कोई साधन ही नहीं है | श्रीचैतन्यमहाप्रभु के उपदेशानुसार श्रीरूपगोस्वामीजी ने अपने ग्रन्थ भक्तिरसामृतसिन्धु में भक्ति के चौंसठ अंगों में पाँच प्रमुख अंग बताये हैं, इन पाँच अंगों में श्रीविग्रह-सेवा को भी प्रधान अंग माना गया है किन्तु फिर भी चैतन्यमहाप्रभुजी ने 'संकीर्तनाराधन' को ही प्रधानता दी है |

यही है यही है भूलि भरमों न कोऊ | संसार में भूलो मत | भ्रम नहीं करना कि ब्रज बहुत बदल गया | नहीं – **यही है यही है भूलि भरमो न कोऊ, भूलि भरमे ते भव भटकि मरिहौ |** अगर ये बात तुम्हारे मन से हट जायेगी तो भवसागर में मरोगे | ये विश्वास रखो कि यह वही ब्रज है – **यही है यही है भूलि भरमो न कोऊ, भूलि भरमे ते भव भटकि मरिहौ | लाड़िली के नित्य सुखसार बिन, कौन विधि वार ते पार परिहौ |** यहाँ अगर भावना करोगे तो राधाकृष्ण के सुख का सार मिलेगा | भवसागर से पार जाने का कोई और रास्ता नहीं है | **"एक अनन्य की टेक उर में धरौ"** एक अनन्य बात कि केवल यही ब्रज याद रहे और संसार में कुछ भी याद न रहे | न पैसा, न धेला, चल पड़ो, राधारानी देती हैं सब कुछ –

एक अनन्य की टेक उर में धरौ, परिहरौ मर्म ज्यों फूल फरिहौ |
श्री हरिप्रिया के परम पद पास ही, आशु अनिवास ही वास करिहौ |

अगर ऐसा भाव पक्का रखोगे तो निश्चय निवास मिलेगा |

भक्त-कृपा का प्रभाव

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'श्रीराधासुधानिधि' (५/५/१९९८) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी नवलश्री जी, मानमन्दिर, बरसाना

रसमयी भक्ति की प्राप्ति का सबसे अच्छा उपाय है - भगवान् की लीलाओं का गान | अगर थोड़ा भी श्रीजी का प्रेम हृदय में प्रेम आ गया है, तो फिर अनन्त अपराध होने पर भी यमदूत (दण्डित करने के लिए) उधर झाकते तक नहीं हैं | एक छोटी-सी कथा है – सब लोग जानते हैं कि वैश्या बहुत खराब होती है, वह स्त्रियों में सबसे अधम मानी जाती है परन्तु वही वेश्या अगर उसके मन में सच्चे संग (विशुद्ध सत्संग) से थोड़ा भी भगवत्प्रेम आ जाए तो वह सबसे आगे चली जाती है, जहाँ (जिस रसरूपा भक्ति में) लाखों वर्ष से साधन करने वाले बड़े-बड़े योगी तक नहीं पहुँच पाते हैं, वह दुर्लभतम स्थिति विशुद्ध संत-संग से एक क्षण में प्राप्त हो जाती है | ये केवल बढ़ा-चढ़ा के बात नहीं कही जा रही है, ऐसा हुआ है - भक्तमाल में कृष्णदासजी की कथा है, वह श्रीनाथजी की लाड़-प्रेम से ऐसी सेवा करते कि कहीं भी कोई सबसे अच्छी चीज देखते तो उसे ठाकुरजी को अर्पित कर देते थे क्योंकि उनका सच्चा प्रेम था, उनकी सेवा की बहुत प्रशंसा की गई है; वह एकबार श्रीनाथजी का सामान खरीदने आगरा गये थे, वहाँ जब वे बाजार से निकल रहे थे तो किसी कोठे से गाने की आवाज सुनाई दी | एक वेश्या उस कोठे में गा रही थी, वह बहुत मीठा गा रही थी और उसका गीत सुनने के लिए बड़े-बड़े धनी लोग बैठे हुए थे | जब कृष्णदासजी उसके कोठे के नीचे से होकर जा रहे थे तब वह वेश्या ऊँचे स्वर में एक तान ले रही थी और तान लेते-लेते उसका गला रुक गया, वह बहुत बड़ी गायिका थी | कृष्णदासजी भी ठाकुरजी के बहुत बड़े गवैया थे, जहाँ से उस वेश्या का गला रुका था, वहाँ से ही उन्होंने तान खींच करके पूरा कर दिया, बड़ी लम्बी तान थी, बुलंद आवाज थी, उसे सुनकर वेश्या की महफ़िल में सन्नाटा छा गया, सब कहने लगे कि यह नहले पे दहला कौन है, उस वेश्या ने भी कहा कि यह कौन गवैया है जो मेरी तान को पूरी कर रहा है | उसने अपनी दासी को नीचे भेजा, वह नीचे उतरकर आई तो देखा कि एक सज्जन खड़े हैं, उनके मस्तक पर बढ़िया वल्लभकुल का तिलक लगा है, बगलबंदी कुर्ता पहने हैं | दासी ने जाके अपनी मालकिन से कहा कि एक कोई भक्त-वैष्णव महात्मा हैं, वह आपका गाना सुन रहे थे और उन्हीं ने आपका गला रुकने पर लम्बी तान लेकर आपके गीत को पूरा किया है | अब तो वेश्या स्वयं नीचे उतरकर आई और कृष्णदासजी को आदरपूर्वक अपने कोठे में ले गयी | कृष्णदासजी तो निर्मल मन के महापुरुष थे, उनको कोई डर नहीं था | डरता तो वह है, जिसके मन में पाप होता है और जिसके मन में पाप नहीं है, उसके लिए तो रंडी (वेश्या) भी भगवती का रूप है | वस्तुतः हमारी आँख ही गन्दी होती है, कोई स्त्री गन्दी नहीं है, कोई आदमी गन्दा नहीं है | गंदगी हमारे भीतर होती है, गंदगी बाहर नहीं है | अगर दृष्टि बढ़िया है तो सारा संसार भगवन्मय हो जाएगा, सब जगह भगवान् ही दिखाई पड़ेंगे |

सर्वं धनमयं लुब्धा, कामुका कामिनीमयम् |
नारायणमयं धीरः पश्यन्ति परमार्थतः ||

एक नियम है कि जैसी तुम्हारी दृष्टि होगी, वैसा ही तुमको दिखाई पड़ेगा | कोई लोभी आदमी जहाँ भी जाएगा, यही सोचेगा कि यहाँ धंधा कैसा चलता है, यहाँ का बाजार कैसा है, वस्तुओं का भाव क्या है और जो कामी होता है वह सोचता है कि किस घर में सुन्दर स्त्री है, भीड़ भरे स्थान में जाने पर भी उसकी दृष्टि सुंदर स्त्री की ओर ही होगी; इसके विपरीत जिसकी विशुद्ध भावमयी दृष्टि होगी, उसे सभी जगह भगवान् दिखेंगे | अस्तु, वेश्या के अनुरोध पर कृष्णदासजी उसके भवन में चले गए, उसने उनको प्रणाम किया और सोचने लगी कि ये तो बड़े ऊँचे महात्मा हैं, उस (वेश्या) ने कहा – "महाराज ! आप बहुत अच्छा गाते हैं |" कृष्णदासजी बोले – "नहीं, मैं गाता तो नहीं हूँ लेकिन

तुम्हारा गाना मुझे अच्छा लगा, तुम गाने का क्या शुल्क लेती हो ? मेरा एक लाला है, वह अगर तुम्हारे गीत से प्रसन्न हो गया तो तुम्हें जीवन भर के लिए मालामाल कर देगा |" वेश्या समझ गयी कि ये तो कोई बड़े धनवान आदमी हैं, उसने कृष्णदासजी से पूछा – "आपका लाला कैसा है ?" उन्होंने कहा – "अब क्या कहूँ, यह समझ लो कि उससे बड़ा कोई नहीं है, क्या तुम उसको गाना सुनाओगी ?" वेश्या बोली – "हाँ, अवश्य ही सुनाऊँगी |" कृष्णदासजी ने फिर पूछा – "क्या शुल्क लोगी ?" अब वेश्या ने जो भी शुल्क बताया, कृष्णदासजी ने उससे दोगुना देने को कहा | वेश्या के साथ गाने-बजाने वाले भड़ुआ भी होते हैं, उनकी भी पूरी मण्डली होती है | वेश्या अकेली नहीं जाती है | कृष्णदास जी ने उन भड़ुओं से कहा कि तुम लोग भी चलो, तो वे बेचारे भी चल पड़े और आपस में कहने लगे – "चलो, आज हमारी बाईजी गिरिराजजी चल रही हैं, अपने सभी वाद्य यंत्र रख लो |" अब वेश्या और उसके साथियों को क्या पता कि गिरिराजजी क्यों चल रहे हैं, उन लोगों ने कभी भक्ति तो की नहीं थी लेकिन वे लोग चल पड़े | बैलगाड़ियों पर सवार होकर आगे-आगे कृष्णदासजी और पीछे-पीछे वेश्या व उसके साथी जा रहे थे | महापुरुषों की ऐसी लीला को हम जैसे संसारी लोग नहीं समझ पाते हैं, वे तो सिंह होते हैं, उनका भाव बहुत निर्मल होता है और हम जैसे लोग व्यर्थ ही उनकी निंदा किया करते हैं –

घुसमुस घुसमुस करत हैं कोने में के चोर |
रूपरसिक हरिव्यास की चौहट्टे पे ठौर ||

जो चोर लोग होते हैं, ये आपस में घुसमुस-घुसमुस किया करते हैं, निंदा करते रहते हैं | कृष्णदासजी तो महात्मा थे, जब उनकी सवारी मथुरा हो करके निकली तो लोग कहने लगे – "अरे, ये तो कृष्णदास महाराज हैं, उनके पीछे तो बाईजी (वेश्या) और उनके भड़ुए जा रहे हैं, हो सकता है कि गिरिराजजी में कोई बहुत बड़ा महोत्सव होगा, उसी के लिए ये लोग जा रहे हैं |" जब कृष्णदासजी गिरिराजजी में पहुँचे तो उस समय श्रीनाथजी के शयन का समय था | कृष्णदासजी ने वेश्या से कहा – "जा, स्नान कर आ, हमारे लाला को पवित्रता से गीत सुनाना |" पहले से ही उन्होंने वेश्या को हजार स्वर्ण मुद्रायें दे दी थीं | वह सोचने लगी कि पहले-पहले नजराना में ही एक हजार की थैली आ गयी और कहीं इनका लाला खुश हो जाएगा तो जाने क्या दे देगा | कृष्णदासजी भी बोले कि यदि मेरा लाला प्रसन्न हो गया तो तुझे पता नहीं क्या दे देगा | वेश्या ने सोचा कि कैसा होगा इनका लाला ? अब उसके मन में विकलता बढ़ी कि इनके लाला को देखना चाहिए | वह तो इसी भाव में थी, उसको यह नहीं पता था कि श्रीनाथजी मूर्ति के रूप में हैं | मूर्ति तो हमलोग समझते हैं, वेश्या तो उन्हें साकार पुरुष के रूप में समझ रही थी, यही होता है 'महात्मा के संग का प्रभाव |' सच्चा संत हृदय में भाव जगा देता है जबकि तुम हजारों साल अकेले बैठ करके व्रत करते रहो, तपस्या करते रहो किन्तु भाव नहीं जागेगा | मान मन्दिर द्वारा संचालित ब्रजयात्रा में सभी ने देखा है कि जिस व्यक्ति ने जीवन में कभी नृत्य नहीं किया, वह भी नाचने लग जाता है | जिन लोगों ने इस ब्रजयात्रा को देखा है, वे सब जानते हैं कि उसमे संकीर्तन की मधुर धुन पर हजार-हजार आदमी नृत्य के लिए खड़े हो जाते हैं; ये सत्संग की महिमा है, जिसके प्रभाव से हृदय में भाव जग जाता है और हृदय में भाव जागना ही सबसे बड़ी चीज है | बिना भाव के कोई भी साधन सफल नहीं होता है | कुछ लोग व्रत करते हैं, यज्ञ करते हैं, ध्यान करते हैं, बहुत से लोग ठाकुरजी की सेवा करते हैं, घंटी बजाते हैं लेकिन भावना के बिना सब व्यर्थ है | अस्तु, कृष्णदासजी की आज्ञा से वेश्या ने स्नान किया और बड़ा सुन्दर श्रृंगार करके उनके पास आई तथा पूछा कि महाराज ! आपका लाला कब आएगा | कृष्णदासजी बोले – "हमारा लाला अभी सो रहा है |" वेश्या समझ गयी कि इनका लाला बहुत बड़ा आदमी है, समय पर सोता है | (शेष पृष्ठ – २६ पर देखें)

वास्तविक बोधकारिणी 'श्रीमद्भगवद्गीताजी'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'श्रीमद्भगवद्गीताजी' से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बाल व्यासाचार्या- साध्वी विरागा जी, मानमन्दिर, बरसाना

(गतांक 'जुलाई २०१९ पेज-२४' के आगे का प्रसंग) -

श्लोक - २८ की शेष व्याख्या – भगवान् राम द्वारा बालि-पत्नी तारा को मोह-विभंजक उपदेश देने से उसे वास्तविक ज्ञान हो गया और विशुद्ध भक्ति उत्पन्न हो गई | तदनन्तर श्रीभगवान् ने सुग्रीवजी को आज्ञा दिया कि बालि के मृतक देह का अन्तिम संस्कार करो –

उमा दारु जोषित की नाईं |
सबहि नचावत रामु गोसाईं ||

(रामचरितमानस, किष्किन्धाकांड - ११)

भगवान् शंकर कहते हैं - हे उमा ! भगवान् कठपुतली की तरह समस्त जीवों को नचाते हैं | भगवान् राम ने बालि-पत्नी तारा की अनादिकालीन माया को नष्ट कर दिया और तब उसके हृदय में ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ, जो हम जैसे लोगों को नहीं होता है | सब लोग इस बात को कहते हैं, विद्वान् भी इस बात को कहते हैं कि यह शरीर पाँच तत्वों से बना हुआ है लेकिन फिर इस पंचतत्वों के बने शरीर से मोहित होकर भोगपरायण हो जाते हैं, कामवासना के वशीभूत होकर नाचते रहते हैं और भाषण में चौपाई और श्लोक बोला करते हैं परन्तु हृदय के भीतर ज्ञान उत्पन्न नहीं होता है | किन्तु जो सत्संग में आता है वह उतना कामी, उतना भोगी नहीं रहेगा जितना कि सत्संग न करने वाला | जो सत्संग से दूर रहता है, वह चोरी, छल-कपट आदि से भोग की ओर दौड़ता है और जब सत्संग के प्रभाव से समझ जाता है कि यह काम तो अग्नि है, यह मुझे ही जला रही है तब फिर वह भोग की ओर नहीं दौड़ता है तब वह काम-भोग से मुक्त होना चाहता है | इसलिए दत्तात्रेय जी ने एक वेश्या पिंगला को अपना गुरु बनाया था, पहले जिन कामियों से उसे प्रेम था अनन्तर उसे उन कामियों से घृणा हो गयी और उसने विचार किया कि ये तो कुत्ते हैं, ये तो आग हैं जो मुझे खा रहे हैं तब उसने एक गीत गाया | इसी प्रकार उर्वशी के भोग से उपरत होने (छूटने) पर पुरुरवा ने कहा –

किं विद्यया किं तपसा किं त्यागेन श्रुतेन वा ।
किं विविक्तेन मौनेन स्त्रीभिर्यस्य मनो हृतम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/२६/१२)

उसकी विद्या, तपस्या, त्याग, वेदाध्ययन आदि सब बेकार है यदि पुरुष के मन का हरण स्त्री करती है और स्त्री के मन का हरण पुरुष द्वारा होता है तब उसका जप, तप आदि सभी साधन व्यर्थ है | इसी प्रकार पिंगला ने भी ज्ञानोत्पन्न होने पर अपने आप को बहुत अधिक धिक्कारा और कहा कि यह मिथिला विदेहों की नगरी है और यहाँ मैं ही एक ऐसी अधम स्त्री हूँ जो पाप के कीचड़ में फँसी हूँ परन्तु आज अवश्य ही मुझ पर भगवान् की कृपा हो गई | लोग कहते हैं कि पिंगला पर भगवान् की ऐसी कृपा कैसे हो गई क्योंकि वह तो वेश्या थी, भोगिनी थी तो इसका कारण यह है कि उसके महल के बगीचे में दत्तात्रेय जी विश्राम कर रहे थे | महापुरुष के अंग की वायु का उसे स्पर्श हुआ, इसीलिए उसके अन्तःकरण में विवेक उत्पन्न हुआ | इसी प्रकार तारा को भी ज्ञानोत्पन्न हो गया क्योंकि उसे स्वयं भगवान् ने उपदेश दिया अन्यथा सैकड़ों लोग प्रतिदिन उपदेश सुनते हैं लेकिन उनको ज्ञान नहीं होता है | उनका चोरी-छल-कपट आदि कोई भी दुर्गुण नहीं छूटता है | कुसंग के कारण पिंगला का ऐसा पतन हुआ कि वह वेश्या बन गई किन्तु सत्संग के प्रभाव से वह इतनी ऊँची उठी कि भगवान् दत्तात्रेय ने उसे गुरु के रूप में स्वीकार किया | सत्संग और कुसंग का ऐसा प्रभाव होता है | दोनों का परिणाम बहुत गहन होता है |

श्लोक – ३१

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥

भगवान् ने अर्जुन से कहा - अपने धर्म को देखकर भी तुम कांपने योग्य नहीं हो (जो इस समय तुम्हारे शरीर में कम्पन हो रहा है) क्योंकि धर्म के लिए युद्ध करने से अधिक कल्याणकारी कर्तव्य क्षत्रिय के लिए कोई दूसरा नहीं है | धर्म के लिए क्षत्रिय को लड़ना ही चाहिए, धर्म के लिए उसे मरना ही चाहिए | क्षत्रिय का सबसे बड़ा कर्तव्य यही है कि वह धर्म के लिए समाज की रक्षा करे | क्षत्रिय शब्द की व्युत्पत्ति है – क्षतात् त्रायते इति क्षत्रियः | क्षत् माने अधर्म और त्र माने रक्षा करना | अधर्म से जो देश की, समाज की और व्यक्ति की रक्षा करता है, वह क्षत्रिय है | जो दूसरों को अधर्म से बचा ले, उसका नाम क्षत्रिय है और जो अधर्म कराये, सिखाये, शराब पिये, हिंसा करे, दूसरों को शराबी बना दे, वह क्षत्रिय नहीं है | क्षत्रियों में मदिरा पान का बहुत प्रचलन है | वे शराब स्वयम पीते हैं और दूसरों को पिलाते हैं | ठाकुरों की बरात में शराब का बहुत अधिक सेवन किया जाता है इसीलिए वास्तव में वे क्षत्रिय नहीं हैं क्योंकि शराब पीना पाँच महापापों में से एक है | आजकल के तथाकथित क्षत्रिय महापाप करते और कराते हैं | इसलिए वे क्षत्रिय नहीं हैं क्योंकि क्षत्रिय का अर्थ है जो समाज की, देश की,धर्म की और व्यक्ति की रक्षा करता है | रक्षा करने में लड़ाई-झगड़ा होता है तो धर्मयुद्ध से कल्याणकारी कर्तव्य कोई दूसरा नहीं है | जो युद्ध धर्म के लिए किया जाता है, उससे अधिक कल्याण कार्य क्षत्रिय के लिए कुछ भी नहीं है | प्रचारकों को इस श्लोक को याद रखना चाहिए कि क्षत्रिय का धर्म क्या है? क्षत्रिय का धर्म है कि वह धर्म के लिए युद्ध करे| समाज में सबको क्षत्रिय शब्द का अर्थ बताना चाहिए | अधर्म से जो समाज को, व्यक्ति को, राष्ट्र को, बचाता है, वह क्षत्रिय है | केवल जाति से कोई क्षत्रिय नहीं हो जाता | कर्म का क्षत्रिय वही है, जो धर्म के लिए लड़ता है, अधर्म से समाज को बचाता है | उपरोक्त श्लोकों का सार यह है कि व्यक्त शरीर से मोह हट जाये तो काम, क्रोध, लोभादि, विकार समाप्त हो जायेंगे | जैसे पिंगला वैश्या महाभोगिनी, महापतिता थी परन्तु जब उसको वैराग्य हुआ तो वह दत्तात्रेय भगवान् की गुरु बन गयी | इतनी ऊँचाई पर पहुंच गयी | इसीलिए भगवान् ने मनुष्य का मोह नष्ट करने के लिए गीता का उपदेश दिया है | जब तक स्थूल शरीर में मोह है तब तक मनुष्य शोक करता है, आसक्ति करता है | ये सब विकार मोह के कारण हैं | ये समाप्त हो गये तो सब दुर्गुण समाप्त हो जाते हैं | न किसी से स्नेह रहेगा, न किसी की स्मृति रहेगी, न किसी की आशा रहेगी | मोह नाश के पश्चात मनुष्य को कोई दुःख नहीं रहता है | यही लक्ष्य रखना चाहिए | भगवान् यही चाहते हैं कि सबके मोह को छोड़कर एकमात्र मेरे आश्रय में रहे, मुझसे ही प्रेम करे, इससे वह अनंतकाल तक सुखी हो जाएगा |

उस समय उससे कोई बात नहीं कर सकता | जैसे बड़े आदमियों से मिलने जाओ तो उनका चपरासी कहता है कि साहब सो रहे हैं, अभी उनसे नहीं मिल सकते, अभी बैठे रहो | कृष्णदासजी ने वेश्या को एक पद बनाकर उससे कहा कि तुमको मेरे लाला के सामने यह पद गाना है – **"मेरो मन गिरधर छवि पे अटक्यो |"** पद का भाव है कि मेरा मन गिरधर की छवि पर अटक गया है | वह कैसा है, ललित त्रिभंगी है, तीन जगह से टेढ़ा होकर अदा से खड़ा होता है, उसकी सुन्दर चाल है, उसकी माधुर्यमयी छवि में मेरा मन विशेष आसक्त हो गया है | उसका नीलवर्ण मनोहारी छवि में अनुरक्त होने पर मेरा मन फिर कभी संसार में नहीं भटका | पद का भाव बताने के बाद कृष्णदासजी ने वेश्या से कहा कि इसे तुमको गाना है | उसको पद दिया तो उसने तुरंत उस पद को गाने के लिए धुन (राग की स्वरलिपि, ट्यूनिंग) बनाई क्योंकि वह श्रेष्ठ गायिका थी | इसके बाद कृष्णदासजी मन्दिर के अन्दर गये और श्रीनाथजी से बोले– "महाराज ! इसका गीत स्वीकार कर लीजियेगा |" श्रीनाथजी ने सोचा कि यह सिफारिश तो बहुत महत्वपूर्ण है, अतः मुझे अब कुछ करना ही पड़ेगा | इसके बाद जब मन्दिर का पर्दा खुला तो वेश्या को ठाकुरजी ने साक्षात् दर्शन दिखा दिया; ये एक सच्चे भक्त की कृपा की महिमा थी |

भजन-निष्ठ भक्त 'सदन कसाईजी'

श्रीबाबामहाराज के 'एकादशी-सत्संग' (२१/०८/२०१४) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी कृष्णाङ्गनाजी, मानमन्दिर, बरसाना

परम पूज्य श्रीबाबामहाराज एकादशी के दिन रासेश्वरी विद्यालय के बच्चों एवं ब्रजवासियों को संबोधित करते हुए – आज हम तुमको सदन कसाईजी की कथा सुनाते हैं | कसाई उसे कहते हैं जो गाय, बैल आदि को काटता है | सदनजी कसाई होने के बाद भी भक्त थे | भक्ति कोई भी करे फिर चाहे वह नीच जाति का चमार है, भंगी है, राक्षस है अथवा असुर जाति में उत्पन्न है, जो भी भक्ति करता है, भगवान् का भजन करता है, वह भक्त है **जाति पाति पूछै न कोय | हरि को भजै सो हरि का होय ||** सदनजी कसाई जाति के होकर भी भगवान् के भक्त थे | मनुष्य अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार ऊँची तथा नीची जाति में उत्पन्न होता है | अगर पिछले जन्म के कर्म खराब होते हैं; तो मनुष्य छोटी जाति प्राप्त करता है, अच्छे कर्म होते हैं तो अच्छी जाति (ब्राह्मण जाति) में जन्म होता है | पिछले जन्म में सदनजी बहुत बड़े तपस्वी ब्राह्मण थे तथा संसार त्यागकर जंगल में भजन कर रहे थे | एक बार एक गाय बड़ी तेजी से भागती जा रही थी क्योंकि एक कसाई मारने के लिए उसे पकड़ना चाहता था | वह गौमाता भागती-भागती जहाँ इनकी जंगल में कुटिया थी; वहीं से निकल रही थी और उसे पकड़ने के लिए वह कसाई उसके पीछे-पीछे दौड़ता आ रहा था | गाय भागती हुई इनकी कुटिया के सामने से निकली, पीछे से कसाई गाय को ढूँढते-ढूँढते आया | उस समय सदनजी कुटिया के बाहर बैठकर के भजन कर रहे थे, कसाई ने इनसे पूछा – "महाराज ! इधर से कोई गाय भागती-भागती गयी है?" इन्होंने मन में सोचा कि साधु को सत्य बोलना चाहिए, इसलिए मैं बता देता हूँ | अतः इन्होंने हाथ उठाकर कहा – "हाँ ! इधर की तरफ गयी है |" उस कसाई ने जा करके गाय को पकड़ लिया और ले जाकर के मार डाला | उस पाप के कारण इस जन्म में सदनजी को कसाई बनना पड़ा क्योंकि उन्होंने हाथ से इशारा किया था और तब जाकर के कसाई गाय को पकड़ पाया था | अगर ये हाथ से संकेत नहीं करते तो वह कसाई गाय को नहीं पकड़ सकता था क्योंकि गाय बड़ी तेजी से भाग रही थी | इसी कारण इनको इस जन्म में कसाई बनना पड़ा | जिस घर में ये पैदा हुए थे, वहाँ यही गौहत्या का पाप होता था, बैल-गाय आदि काटे जाते थे | उस पिछले जन्म के पाप के कारण इनका जन्म एक कसाई घर में हुआ | एक दिन इनके परिवार के सदस्यों में से किसी का विवाह था, विवाह में बहुत से मेहमान आये हुए थे | विवाह की ज्योनार (पंगत) हो रही थी | कसाई लोग माँस तो खाते ही हैं इसलिए एक बैल लाया गया था और उस बैल को विवाह में उपस्थित लोग काटने वाले थे | सदन छोटे-से थे और इन्होंने पूर्व जन्म में भजन किया था, इसलिए बचपन से ही इनके हृदय में दया थी, हिंसा नहीं थी | इन्होंने अपने पिताजी से पूछा – "आज घर पर इतनी भीड़ क्यों है ?" पिताजी –"आज तुम्हारे चाचा का विवाह है |" सदन – "ये बैल क्यों आया है ?" पिताजी – "इसे काटा जायेगा, विवाह के भोज के लिए हम लोग काटेंगे |" यह सुनकर कि इस बैल को काट दिया जायेगा तो इनको बैल पर अत्यंत दया आयी और ये बैल के पास जाकर उससे लिपटकर रोने लग गये | जब यह बैल से लिपट कर रोने लग गये तो बैल मनुष्य की भाषा में धीरे से बोला – "सदन ! तुम रोओ नहीं, हर आदमी अपने किये हुए कर्मों का फल भोगता है, कर्मफल अवश्य भोगना पड़ता है; उससे कोई बच नही सकता |" श्रीबाबा महाराज उपस्थित बच्चों को सम्बोधित करते हुए – "इसलिए तुम लोग अभी बच्चे हो, गलत संग नही करना | गलत संग से आदमी निंदनीय कार्य सीखता है और फिर उसका दण्ड भोगना पड़ता है |" अस्तु, इन्होंने बैल से पूछा कि पिछले जन्म में ऐसा तुमने कौन सा कार्य किया था जिससे तुमको ये लोग काटने जा रहे हैं ? बैल ने कहा – "हमने पिछले जन्मों में इनकी हत्या की थी, इसलिए अब ये हमको मारेंगे किन्तु हमको कोई दुःख नहीं

है क्योंकि हमने पिछले जन्म में भजन भी किया और भजन करने वालों को अच्छी बुद्धि मिलती है, चाहे वे किसी भी योनि में; कहीं भी चले जाएँ | अच्छी बुद्धि से वे अच्छे काम करते हैं | भजन कभी नष्ट नही होता | पैसा नष्ट हो जायेगा, शरीर नष्ट हो जायेगा (ये शरीर भी तो एक दिन जलेगा), धन-सम्पत्ति, मकान सब नष्ट हो जायेंगे | स्त्री, पुत्र, पिता-माता सब मर जायेंगे | कोई भी यहाँ (मृत्युलोक पर) नहीं रहेगा | कबीरदासजी ने कहा है – **साधो ये मुर्दों का गाँव।** ये सारा संसार मृत है | **पीर मरे पैगम्बर मरिहें, मर गये जिंदा जोगी।**
राजा मरिहै परजा मरिहे, मर गये वैद्य ओर रोगी।
चंदा मरिहें सूरज मरिहें, मरिहें धरती आकाश।
चौदह भुवन के चौधरी मरिहें, इनहू की का आश।
नाम अनाम अनन्त रहत है, दूजा तत्त्व न होई।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, भटक मरो मत कोई॥
जितने भी हम लोग हैं, सब मुर्दे हैं | कोई जिंदा नही रहेगा | कोई १० साल बाद मरेगा, कोई २० साल, कोई ५० साल बाद, सब मर जायेंगे | इसलिए थोड़े-से जीवन में भजन करना चाहिए | भजन कभी नहीं मरता है | इन्होंने (सदनजी) उस बैल से पूछा कि तुमको दुःख नहीं है ? उस पर बैल ने उत्तर दिया कि नहीं, मैंने जो कर्म किया है, उसको भोगने से छुट्टी मिल जाएगी | तुम भी भजन करना | अब तुम जाओ, ये लोग मुझको मारेंगे | सदन वहाँ से हट गए और उस बैल को पकड़ के लोग ले गए तथा उन्होंने उसको मारा व उसके शरीर को काटकर माँस पकाया गया, जितने भी कसाई के अतिथि थे, उन सबका भोजन हुआ | सदन छोटे से लड़के थे लेकिन उस दिन से उन्होंने सोच लिया कि मैं कसाई हूँ लेकिन किसी जीव की हिंसा नहीं करूँगा | ये भजनपरायण हो गये और जब माँ-बाप कहते थे कि हम बैल पकड़कर लाये हैं, तू इसको काट तो ये कहते थे कि मैं इसे नहीं काटूँगा | माता-पिता कहते थे कि नहीं काटेगा तो खाएगा क्या ? सदन कटा-कटाया माँस लाके बेचते थे और उसी से इनका निर्वाह होता था | इन्होंने अपना ब्याह नहीं कराया क्योंकि इन्हें ज्ञान हो गया था कि संसार झूठा है, थोड़ी देर में हम मर जायेंगे | धन- सम्पत्ति, परिवार, माँ-बाप, स्त्री-पुत्र आदि सब झूठे हैं, सच्चा तो केवल भगवान् का भजन है | जब पुण्य उदित होते हैं तब सत्संग मिलता है, एक चौपाई है –

पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता।
सतसंगति संसृति कर अंता॥

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड- ४५)

अच्छे कर्मों के फलस्वरूप साधु संग मिलता है | संत संग यदि मिल गया तो हमारा संसार खत्म हो जाएगा | हम भजन सीखेंगे और करेंगे तो संसार से मुक्त हो जायेंगे | (श्रीबाबा बच्चों से - तुम लोगों (बच्चों) ने पूर्व जन्म में कोई बहुत ज्यादा पुण्य किये हैं, जिसके परिणामस्वरूप बचपन से ही तुम लोग यहाँ सत्संग में आ गये हो | हमसे तुम लोग बहुत ज्यादा अच्छे हो, हम तो पढ़ने लिखने में लगे रहे और बड़ी मुश्किल से गह्वरवन वास मिला | तुम लोग तो बचपन से ही यहाँ आ गए, ये तुम्हारे पिछले जन्मों के पुण्य हैं अन्यथा साधु संग अत्यधिक दुर्लभ है | लोग साधु बन जाते हैं लेकिन उनसे भजन नही हो पाता है | तुमको तो दिन-रात भजन मिल गया है |) सदन जी अपनी दुकान पर माँस बेचते थे | एक दिन एक संत इनकी दुकान के सामने से निकले | .....क्रमशः.....

आशा इधर-उधर गयी और भक्ति नष्ट हो गयी। भक्ति करने की शक्ति भगवान् ही देता है, नहीं तो जीव में क्षमता नहीं है। हरिराम व्यास जी ने कहा है कि हम लोग संसारियों से बात करते हैं। समधी आया, ससुर आया, इन्हें आदर से बिठाते हैं और भक्तों का आदर नहीं करते। जब भक्तों से प्यार नहीं है तो भगवान् तुमको सौ जन्म में भी नहीं मिलेंगे।

'भारतवर्ष' का उज्जवल भविष्य

बाबाश्री की केन्द्रीय पशुपालन-मंत्रीजी से वार्ता

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी मधुराङ्गनाजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीबाबामहाराज– एक बार राजा नहुष च्यवन ऋषि के पास यह जिज्ञासा लेकर पहुँचे कि देश का कल्याण कैसे हो ? तो च्यवन ऋषि ने कहा –

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम् ।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति ॥

(महाभारत, अनुशासनपर्व ५१/३२)

जहाँ पर गोवंश निर्भय श्वांस लेता है, उस देश में जितने भी पाप होते हैं, उन्हें गाय खींच लेती है और इस तरह वह देश बहुत ही शोभा को प्राप्त होता है | हम यह तो नहीं कह सकते कि इतना ऊँचा लक्ष्य हमारा है किन्तु कुछ तो अवश्य ही है | गौसेवा के उच्च आदर्शों को लेकर यह गौशाला चल रही है और बड़े आश्चर्य की बात है कि कुछ हिन्दू लोग ही इसके विरोधी हो गये | श्रीमाताजी गौशाला विदेशी सहायता से चल रही थी, विरोधी लोगों ने आर्थिक सहयोग करने वालों के पास पहुँचकर इस गौशाला के कार्यकर्ताओं की निंदा की और जैसा कि रामचरितमानस में लिखा है –

को न कुसंगति पाइ नसाई ।
रहइ न नीच मतें चतुराई ॥

(श्रीरामचरितमानसजी, अयोध्याकाण्ड – २४)

ऐसा कौन है जो कुसंगति के प्रभाव से नष्ट न हो जाए | इस सिद्धांत के अनुसार निंदकों की बात को सच मानकर उन आर्थिक सहयोग करने वाले लोगों ने माताजी गौशाला में सेवा करना बंद कर दिया | मैंने गौशाला के प्रबंधकों से कहा कि गौशाला को प्रभु चलाता है | दो साल से इस गौशाला में विदेशी सहायता बंद है किन्तु फिर भी यह निरन्तर प्रगति कर रही है | गायों को यहाँ लाया जाता है, मैंने कह दिया है कि जो भी गायें यहाँ लायी जाएँ, उन्हें लौटाओ मत | प्रभु ही सबका निर्वाह करता है और वही सब प्रबंध करेगा | इस तरह किसी प्रकार के सहयोग के बिना भी माताजी गौशाला का कार्य प्रगति पर है |

मंत्रीजी– गुरुदेव, जैसा कि आपने कहा कि गौ-सेवा विदेशी सहायता से नहीं बल्कि प्रभु कृपा से होती है, यही बात पूर्णतया सत्य है |

श्रीबाबामहाराज– भारतीय लोगों की सहायता से अब यह गौशाला बढ़ रही है, लगातार बढ़ती ही जा रही है |

मंत्रीजी– मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए | आपने बताया कि कुछ हिन्दुओं ने ही इस गौशाला का विरोध किया, यह हमारे देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है | इसीलिए मैं आपका आशीर्वाद लेने आया हूँ और आशीर्वाद लेकर ही मैं यहाँ से निकलूँगा | मुझे बड़ा भय लगता है कि कहीं भारत, यहाँ की संस्कृति और यहाँ का सनातन धर्म विलुप्त न हो जाये | इस देश में दो धर्म ईसाई और इस्लाम तेजी से बढ़ रहे हैं, जो मथुरा में भी हैं | ईसाई लोग पूरे देश में फैले हुए हैं और उनके धर्मगुरु तेजी से अपने धर्म को फैला रहे हैं | मुस्लिम धर्मगुरु तो धर्म नहीं फैला रहे, वे तो विषवमन कर रहे हैं | हम एक तरफ ईसाई धर्म प्रचारकों के रूप में silent killer (शांत हत्यारों) और मुस्लिम प्रचारकों के रूप में आक्रामक हत्यारों(aggressive killer) का सामना कर रहे हैं और तीसरी तरफ हमारे धर्मगुरुओं की स्थिति यह है कि मैं हरिद्वार गया था प्रधान मंत्री मोदीजी द्वारा बनाये गये जनसंख्या नियंत्रण कानून के सम्बन्ध में संतों का समर्थन हासिल करने के लिये | भारत में हिन्दुओं के अब दो से अधिक बच्चे नहीं रह गये हैं | भारत में हम आर्यावर्त(आर्यों की भूमि) की चर्चा तो करते हैं किन्तु अब आर्यावर्त कहाँ रह गया है ? ईरान में पहले सनातन धर्म था किन्तु अब वह इस्लामिक देश बन गया है | कश्मीर पहले एक हिन्दू राज्य था, जहाँ मुसलमानों ने हिन्दुओं की बर्बरतापूर्वक हत्या की, लाखों

की संख्या में पंडितों को वहाँ से भगा दिया | मुझसे एक बार एक कांग्रेसी प्रोफ़ेसर ने कहा कि आप भारतीय संस्कृति की चिंता क्यों करते हैं, हजारों वर्षों के विदेशी शासन के बावजूद भी जब कोई इसका विनाश नहीं कर सका तो अब क्या विनाश करेगा ? मैंने उनसे कहा कि आपको इसका विनाश नहीं दिखाई देता किन्तु मुझे तो दिखाई देता है | आर्यावर्त की सीमा प्राचीन काल में श्रीलंका से लेकर दक्षिण पूर्व एशिया में ईरान, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड, अफगानिस्तान, बर्मा आदि देशों तक फैली थी | मुगलों के रूप में भारत में ११०० मुसलमान आये थे किन्तु आज इनकी आबादी १०० करोड़ हो गयी है | हम लोग भारत में कहीं देखते हैं तो हमारे बच्चों को लगता है कि ये सनातन धर्म को मानने वाले सनातनी हिन्दुओं की बस्तियां हैं, एक तो आजकल कोई हिन्दू अपने को सनातनी नहीं कहता है | हिन्दुओं का दुर्भाग्य है कि आज वे जातियों में विभाजित हो गये हैं | इनमे कोई हिन्दू नहीं है, सब केवल जातियां रह गयी हैं | मैं बिहार का निवासी हूँ, बिहार में पुनिया एक कमिश्नरी है, उसके अंतर्गत चार जिले अब समाप्त हो गये हैं क्योंकि वहाँ मुसलमानों की आबादी बढ़ चुकी है, हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये हैं, मुस्लिम आबादी और मुस्लिम प्रभाव बढ़ने से बंगाल समाप्त हो गया, २० से ३० साल बाद बंगाल में हिन्दू दिखाई ही नहीं देंगे, इसी प्रकार हिन्दुओं के घटने से आसाम समाप्त हो गया, ६ राज्य समाप्त हो गये | उत्तर प्रदेश में मुस्लिम आबादी बढ़ने से १७ जिले ख़त्म हो गये | भारत में कोई भी ऐसा राज्य नहीं है, जहाँ हिन्दुओं की जनसंख्या तेजी से घट न गयी हो | अतः अब तो हिन्दू थोड़े से बचे हैं | हाल ही में मैं संतों को बुलाने गया और उनसे कहा कि समाज में मेरी विश्वसनीयता नहीं है किन्तु आप संतों की विश्वसनीयता है | मुझे कुछ संत ऐसे मिले जो सनातन धर्म के लिए कार्य करते थे, कुछ भारतीय जनता पार्टी का समर्थन करते थे और कुछ संत कांग्रेस का समर्थन करते थे | मैंने संतों को लेकर कई कार्यक्रम किये उन्हें निमंत्रित किया, किन्तु बाद में मेरा उनसे मोह भंग हो गया क्योंकि बिना दक्षिणा के वे कहीं नहीं आते जाते थे | तब मैंने सोचा कि जिस धर्म के धर्मगुरुओं की ऐसी स्थिति है उस धर्म का पतन होना निश्चित है | एक सज्जन जो पहले आर.एस.एस. में थे वर्तमान में वे सन्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं, मैं उनके पास गया तो उन्होंने मुझसे कहा कि मैं आपकी बातों से सहमत हूँ, जिस धर्माचार्य के भीतर हिन्दू धर्म की भावना है उसे आप भगवा वस्त्र पहनाओ और समाज में ले जाओ | आज भी मेरे पास एक सन्त आये थे, मैंने उनसे कहा कि महाराज जी मैं आऊंगा आपके पास किन्तु आप सौ या छः सौ भगवाधारी सन्त एक जिले के लिए दो, उस जिले में आप कुछ मत करो लेकिन जो समाज के वंचित लोग हैं, जिन्हें जाटव (चमार) कहते हैं, चाण्डाल कहते हैं अथवा जिस भी नाम से पुकारते हैं, उनके बच्चों को गोद लेकर उन्हें धर्म का ज्ञान दो, उनको आचार्य बनाओ, कर्मकांड की शिक्षा दो | यदि हरिद्वार के सारे सन्त छः सौ जिले ले लें और इस प्रकार का कल्याण कार्य करें तो इससे हिन्दू धर्म का बहुत लाभ होगा | गाय और सनातन धर्म का विनाश-ये दो मेरी पीड़ा हैं | आपकी गौशाला में मुझे शाश्वत नामक एक नवयुवक मिला, मैंने उससे कहा कि तुम मुझसे बहुत अच्छे हो क्योंकि तुम अपनी नौकरी छोड़ करके गौमाता की सेवा में लगे हो | गौशाला के ही अधिकारियों ने बताया कि वहाँ पर चन्द्रमोहन जी नामक एक अवकाश प्राप्त इंजीनियर हैं जो बायोगैस प्लांट और जैविक खाद के कार्यक्रम को संचालित कर रहे हैं | ये लोग बड़े सौभाग्यशाली हैं जो गाय के रूप में महादेव की सेवा कर रहे हैं | आप मुझे भी आशीर्वाद दें, मुझमें भी ताकत आये कि मैं भी कुछ कर सकूँ |

श्रीबाबामहाराज– हम भी समझ रहे हैं जो आपकी भावनाएं व्यक्त हो रही हैं, यह आश्चर्यजनक है, इसका

मतलब है कि भारतवर्ष प्रगति पर है क्योंकि भावना ही भक्ति है | सबसे बड़ी बात ये है कि भारत की राजसत्ता में परिवर्तन हुआ, भाजपा सत्ता में आई, यह एक शुभ लक्षण है | मैं भी पहले जब प्रयाग विश्वविद्यालय में पढ़ता था तो आर.एस.एस. की शाखाओं में जाता था, उस समय आर.एस.एस प्रमुख गुरु गोवलकरजी प्रयाग में आये थे, उनके स्वागत के लिए बहुत से स्वयं सेवक गए थे, आर.एस.एस से प्राप्त भावना को लेकर ही मैं ब्रज में आया और यहाँ आने के बाद देखा कि चारो ओर संरक्षण की जगह गौवंश का विनाश हो रहा है | किन्तु श्रीजी की कृपा से हमारे यहाँ केवल तीन चार गायों से गौशाला का शुभारम्भ हुआ | प्रभु कृपा करता है और आज बिना किसी याचना के हमारी गौशाला मे ५५,००० गायों की सेवा हो रही है और मैं समझता हूँ कि यदि इसी प्रकार ठाकुर जी की कृपा बढ़ती रही तो भारतवर्ष का एक कार्य तो कुछ अंश में पूरा हो जाएगा |

श्रीराधाकान्तशास्त्री (मानमंदिर के प्रबंधक) – श्रीबाबामहाराज ने केवल गौ-रक्षा ही नहीं अपितु ब्रज की सेवा के सम्बन्ध में बहुत से कार्य किये | खनन माफियाओं द्वारा ब्रज के पर्वतों का विनाश किया जा रहा था, यदि बाबा के द्वारा इनका संरक्षण न होता तो ये सब पर्वत विलुप्त हो जाते | लगभग ५२३२ हेक्टेयर क्षेत्र को आरक्षित कराया गया नही तो ये पर्वत आज ब्रज में दिखाई न देते | पिछले सत्तर वर्षों से महाराजश्री ब्रज की संस्कृति की रक्षा में ही पूर्णतया समर्पित रहे हैं, इनकी प्रेरणा से भारत के चालीस हजार गाँवों में संकीर्तन प्रभात फेरियां चलाई जा रही हैं |

श्रीराधाप्रियजी– जैसा कि आपने चर्चा किया था, श्रीबाबा महाराज भी धार्मिक संकीर्णताओं के बिलकुल खिलाफ हैं |

श्रीबाबामहाराज– भारतवर्ष तो फिर से उठ रहा है | आप जो कुछ भी कह रहे हैं, सब ठीक है | देश उठ रहा है इसका पहला प्रमाण है कि सत्तर साल में कश्मीर की जो समस्या हल नहीं हुई थी वह भाजपा के सत्ता में आने से हल हो गयी, दूसरी बात ये है कि और भी अच्छे कार्य शुरू हो रहे हैं, धीरे-धीरे हो रहे हैं | ज्यों-ज्यों भाजपा सशक्त होगी, आपलोग सशक्त होंगे त्यों-त्यों भारतवर्ष भी सशक्त होगा क्योंकि आपलोगों में भारतीयता है, राष्ट्रीयता है और इसीलिए भगवान् की कृपा से चुनावों में भाजपा की विजय हुई जबकि असंभव काम था | सोनिया गांधी के शासन काल में हमलोगों ने यमुना जी के लिए आन्दोलन किया था, उसमें कोई सफलता नहीं मिली | सन् २०१५ में मोदी जी के शासन काल में हमलोगों ने पुनः यमुना आन्दोलन किया, उस समय भाजपा सरकार ने आश्वासन दिया था लेकिन वह आश्वासन केवल आश्वासन ही रहा | सच्चाई ये है कि श्यामसुंदर ने हमारा वह आन्दोलन सफल किया जबकि सफलता की आशा तो नहीं थी |

मंत्रीजी– लोग आपके आन्दोलन के प्रभाव से डर गए थे |

श्रीबाबामहाराज– हम तो यही समझते हैं कि भारत उठेगा, उठ चुका है, उठ रहा है |

मंत्रीजी– महाराज जी ! हिन्दुओं का संख्या बल घट रहा है, इसकी मुझे चिंता है |

श्रीराधाकान्तशास्त्रीजी– मैं तो यह जानता हूँ कि आपकी सरकार जनसँख्या नियंत्रण कानून लागू करेगी तो अवश्य ही बहुत जल्दी सफलता मिलेगी |

डॉ.रामजीलालशास्त्री (मानमंदिरसेवासंस्थान के अध्यक्ष)– मुसलमान भारत में रह रहे हैं अतः उन्हें भी यहाँ के कानून का पालन करना चाहिए कि दो या तीन से अधिक बच्चे नहीं पैदा करेंगे |

श्रीबाबामहाराज– मैं यह जानता हूँ कि भारतीय जनता पार्टी भगवान् की कृपा से ही शासन में आई है और बहुत शीघ्र भारत प्रगति करेगा | भगवान् श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों से कहा था कि गौपालन करना हमारा धर्म है, अतः गाय का पालन करो, कैसे करोगे ? धूप में छतरी मत लगाओ,

पैरों में जूता-चप्पल मत पहनो | ऐसा स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने करके दिखाया, उनके जैसा गौ-सेवक आजतक विश्व में कोई नहीं हुआ |

गोपालनं स्वधर्म्मो नस्तास्तु निश्छत्र-पादुकाः ।
यथा गावस्तथा गोपास्तर्हि धर्म्मः सुनिर्म्मलः ॥
धर्मादायुर्यशो वृद्धिर्धर्म्मो रक्षति रक्षितः ।
स कथं त्यज्यते मातर्भीषु धर्म्मोऽस्ति रक्षिता ॥

(गोविन्दलीलामृत, पंचमसर्ग – २८,२९)

यशोदा मैया ने गौचारण के लिए तैयार कन्हैया से कहा कि लाला ! पादुका तो पहन जा किन्तु कन्हैया ने मना कर दिया | यहाँ पर गोपालजी ने गौपालन-धर्म की सबसे बड़ी शिक्षा दी है | यह आदर्श कभी तो सफल होगा और इसी आदर्श को लेकर हमारे यहाँ 'श्रीमाताजी गौशाला' की स्थापना की गयी लेकिन हमलोगों में गोपालन करने की सच्ची सामर्थ्य नहीं है | एक व्यक्ति भी यदि सच्चा गौ-सेवक बन जाए जो भगवान् श्रीकृष्ण के बताये हुए गोपालन के सिद्धांत पर चल सके तो उसी से देश परम पवित्र हो जाएगा |

मंत्रीजी– महाराज जी ! आप जितना भी गौसेवा के लिए कर रहे हैं, वह बहुत बड़ी कृपा है | जनसंख्या नियंत्रण कानून को लागू करने में हमारी सरकार सफल हो, यही आपका आशीर्वाद चाहिए |

साध्वी मुरलिकाजी द्वारा श्रीमद्भागवतकथामृत की वर्षा ✶ कोल्हापुर (महाराष्ट्र) ✶

RNI REFRENCE NO.1313897: REGISTRATION NO.- UP BIL- 2017/72945 TITLE CODE UP BIL – 04953 POSTAL REGD NO. MTR 093/2018-20

स्वामी मानमन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक / मुद्रक एवं सम्पादक राधाकांत शास्त्री द्वारा gupta offset printer's A-42 industrial area, new delhi से मुद्रित एवं मानमन्दिर सेवा संस्थान, गहरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित